सुबह सवेरे

A Daily News Magazine

इंदौर

मंगलवार, 06 अगस्त, 2024

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 283, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्या: MP/IDC/1529/2016-2018)

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

चेतावनी की अनदेखी व जंगलों की लूट के कारण हुई वायनाड त्रासदी !

वंदिता मिश्रा

गत 30 जुलाई को वायनाड में हुए भूस्खलन से अभी तक 358 लोगों की मौत हो चुकी है और 240 से अधिक अभी भी लापता हैं। इसकी पूरी संभावना है कि मौत का यह आँकड़ा अभी और भी बढ़ेगा। पिछले एक सप्ताह में देशभर में भूस्खलन की घटनाएँ घटी हैं। इसमें केरल के अतिरिक्त कर्नाटक, और 6 अन्य हिमालयी राज्य- अरुणाचल, असम, मिज़ोरम, सिक्किम, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश शामिल हैं। इन राज्यों में हुई इस भयानक त्रासदी में हुई मौतों को भी जोड़ लिया जाए तो, बीते सप्ताह भारत में भूस्खलन की घटनाओं में लगभग 304 लोग और मारे जा चुके हैं। सिडनी विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर पियरे रॉगनोन का मानना है कि कम समय में अत्यधिक वर्षा, भूस्खलन के लिए मैकेनिकल ट्रिगर की तरह काम करती है और इससे भारी मात्रा में मिट्टी का बहाव होता है, जिससे वायनाड जैसी घटनाएँ जन्म लेती हैं; जहां महीनों तक सिर्फ़ तबाही, मौत और शोक का ही संचार होता रहता है। वायनाड जैसी घटनाओं के लिए प्राकृतिक कारण भी होते हैं और मानव-जनित कारण भी। जहां प्राकृतिक कारणों के लिए खुद को समायोजित करना ज़रूरी होता है वहीं मानवजनित कारकों के लिए नीतिगत प्रयास करने होते हैं। विकास के नाम पर जिस तरह बेलगाम गति से जंगलों को काटा जा रहा है उससे लगता है कि सरकारों में आपदाओं को रोकने के लिए नीतिगत प्रयास करने की मंशा है ही नहीं।

जिस वायनाड में 'मौत का भूस्खलन' आया वहाँ बेतरतीब तरीक़े से जंगलों का कटना जारी है। भारतीय वन सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार, वायनाड ज़िले में 2007 में 1775 वर्ग किमी. वनक्षेत्र था जो 2021 में 11 प्रतिशत घटकर 1585 वर्ग किमी. ही रह गया। पूरे केरल में 2008-09 से 2022-23 के बीच वन क्षेत्र की भूमि का ग़ैर-वन उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल 178 प्रतिशत तक बढ़ गया है। केरल पारिस्थितिकीय रूप से बेहद संवेदनशील राज्य है। बढ़ते पर्यटन और घटते वनों की वजह से यह क्षेत्र और भी ज़्यादा संवेदनशील होता जा रहा है लेकिन इसके बावजूद केंद्र और राज्य सरकारें निश्चिंत होकर बैठी हैं।

नेशनल, रिमोट सेंसिंग सेंटर, हैदराबाद द्वारा तैयार, 'भारत का भूस्खलन एटलस-2023', के अनुसार, भूस्खलन के लिहाज़ से सर्वाधिक संवेदनशील क्षेत्र हिमालय का है। लेकिन यदि जनसंख्या घनत्व को ध्यान में रखकर आकलन किया जाय तो जो नुक़सान पश्चिमी घाट से जुड़े क्षेत्रों में होता है वह अतुलनीय है। केरल स्थित वायनाड, पश्चिमी घाट का ही हिस्सा है। यह क्षेत्र वैश्विक जैवविविधता हॉट स्पॉट, का हिस्सा है। पश्चिमी घाट में आने वाले अन्य राज्य हैं- गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक और तमिलनाडु। यह पारिस्थिकीय रूप से भारत के सबसे संवेदनशील क्षेत्रों में से एक है। इस क्षेत्र से वनों का उन्मूलन भविष्य की आपदाओं और मौतों के लिए ठोस ज़मीन तैयार करने जैसा है। इसके महत्व को समझते हुए 2010 में तत्कालीन यूपीए सरकार ने प्रख्यात पर्यावरणविद माधव गाडगिल की अध्यक्षता में 'वेस्टर्न घाट इकोलॉजी एक्सपर्ट पैनल' बनाया जिसका काम था पश्चिमी घाट के पर्यावरणीय महत्व को समझते हुए अनुशंसा देना।

गाडगिल कमेटी ने लगभग पूरे पश्चिमी घाट को इको सेंसिटिव जोन घोषित करने की अनुशंसा की। बाद में 2013 में बनी कस्तूरीरंगन कमेटी ने पूरे पश्चिमी घाट के 37 प्रतिशत हिस्से को इकोसेंसिटिव जोन घोषित करने की सलाह दी। ताज्जुब की बात यह है कि सरकार ने दोनों में से किसी भी अनुशंसा को स्वीकार नहीं किया। 2021 में कर्नाटक में बीजेपी सरकार ने कहा कि पश्चिमी घाट को इकोसेंसिटिव जोन घोषित करने से क्षेत्र के लोगों की आजीविका पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। पश्चिमी घाट को लेकर लगभग यही रुख़ उन सभी राज्यों का भी रहा है जो इस क्षेत्र में पड़ते हैं।

बड़ी निराशा की बात है कि आपदाओं को लेकर भारत में एक सुस्पष्ट स्वभाव के राजनैतिक दर्शन होते हैं। जब तक आपदाएँ नहीं आतीं तब तक सरकारें, पर्यावरण कार्यकर्ताओं और विशेषज्ञों को अपना दुश्मन समझती है, उनकी किसी भी बात को, उनके द्वारा बनाई गयीं रिपोर्ट्स को, लिखे गये लेखों को जरा भी तवज्जो नहीं दी जाती। लेकिन सच्चाई यह है कि जब आपदा सामने आती है तो भारत बिल्कुल अलग दिखने लगता है। मुझे याद है कि माधव गाडगिल कमेटी की रिपोर्ट (2011) आते ही अफ़रा-तफ़री मच गई थी, चारों तरफ़ इस रिपोर्ट के ख़िलाफ़ प्रदर्शन भी शुरू हो गये थे। पश्चिमी घाट के राज्यों की सरकारें अचानक से इमरजेंसी मोड में आकर रिपोर्ट को नकारने की होड़ में शामिल हो गई थीं और यह सब उद्योगपतियों के इशारों पर हो रहा था। क्योंकि गाडगिल रिपोर्ट, जंगल काटकर खनन को प्रतिबंधित करने का प्रस्ताव दे रही थी, जंगल को लूट से बचा रही थी, जंगल लूटकर अरबों-खरबों रुपये नेताओं और उद्योगपतियों की जेबों में जाने से रोक रही थी।

इतने साल हो गए आज भी यह रिपोर्ट स्वीकार नहीं हो पायी है, क्यों नहीं स्वीकार की गई होगी? इसीलिए क्योंकि यह आदिवासियों, जंगलों और जन जीवन के लिए ज्यादा सोचने वाली रिपोर्ट थी। देश में जब भी आपदाएँ आती हैं तब नेता ही नहीं संस्थाएँ भी जनता को 'दिखाने' के लिए सक्रिय हो जाती हैं। अचानक से एनजीटी सक्रिय हो जाता है, सुप्रीम कोर्ट भी अपनी सबसे पसंदीदा कार्यवाही 'फटकार' लगाने लगाता है, कुछ मीडिया संस्थान सवाल पूछने लगते हैं पर ऐसा होता है कि आपदाओं में जिनके परिजन चले गये, उनके आँसू सूख भी नहीं पाते और ये सभी संस्थान फिर से ढीला ढाला रवैया अपना लेते हैं। जंगल कटते रहते हैं, सरकार झूठ बोलती रहती है, मुट्ठी भर लोग जंगलों की लूट से कमाई करते हैं और अदालतें सुनवाई करती रहती हैं। देश की राजनीति पर्यावरणीय मुद्दे को लेकर इतने अंधकार में है कि कोई बेहतर नीति की आशा कैसे की जा सकती है।

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (NGT) ने केंद्रीय पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को आदेश दिया है कि पश्चिमी घाट को इकोसेंसिटिव ज़ोन घोषित करें और इसके लिए एक समय सीमा तय करने को कहा है। यह बात समझना अब बहुत ज़रूरी है कि पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन अब पार्टटाइम मुद्दा नहीं है। इसे मीडिया में और देश के ज़िम्मेदार नेताओं की रैलियों में अच्छे से उठाया जाए। क्योंकि जलवायु परिवर्तन में हो रहे बदलाव आर्थिक और शारीरिक रूप से कमजोर वर्गों को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाते हैं। अब वक्त है कि एक्शन मोड में आया जाए क्योंकि पूरा देश चरम मौसम की घटनाओं की चपेट में है। जब नेतृत्व सतर्क और ज़िम्मेदार बनेगा तब संस्थाएँ भी मज़बूत होंगी और व्यापक पर्यावरणीय हितों को साधा जा सकेगा जोकि इस सदी की सबसे अहम चुनौती है।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

पीएम आवास में घुसे प्रदर्शनकारी

पूरे देश में कर्फ्यू, इंटरनेट बंद, सेना ने संभाली कमान, पीएम शेख हसीना ने इस्तीफा दिया

- भारत पहुँची पीएम हसीना, दिल्ली-गाजियाबाद के हिंडन एयरबेस पर लैंड हुआ उनका विमान
- लोग पीएम हाउस में घुसे, आर्मी ने रोका नहीं
- बांग्लादेश में 1971 जैसे हालात, हिंदुओं का पलायन शुरु

ढाका/नई दिल्ली (एजेंसी)। बांग्लादेश में 2 महीने से चल रहे आरक्षण विरोधी छात्र आंदोलन के बाद प्रधानमंत्री शेख हसीना ने सोमवार, 5 अगस्त को पद से इस्तीफा दे दिया। हिंसक माहौल के चलते शेख हसीना को देश छोड़कर भागना पड़ा। वे सेना के विमान से रवाना हुईं। खबरों के मुताबिक उनकी बहन रेहाना भी साथ हैं। वे बंगाल के रास्ते दिल्ली पहुंच गई हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, उनका विमान गाजियाबाद के हिंडन एयरबेस पर उतर गया था। यहां वह अजीत डोभाल के साथ थीं। उसके बाद वे लंदन, फिनलैंड या दूसरे देश जा सकती हैं।बांग्लादेश के सेना प्रमुख ने कहा, हम अंतरिम सरकार बनाएंगे, देश को अब हम संभालेंगे। आंदोलन में जिन लोगों की हत्या की गई है, उन्हें इंसाफ दिलाया जाएगा। ढाका में हालात बेकाबू हैं। सेना प्रमुख ने लोगों से शांति बहाली की अपील की है। उन्होंने कहा कि हम हालात काबू में ले आएंगे। भरोसा रखें। करीब 4 लाख लोग सड़कों पर हैं। राजधानी में जगह-जगह हिंसा और तोड़फोड़ हो रही है।

इस्तीफा देने के बाद जश्न

पीएम हसीना के इस्तीफे के बाद यहां लाखों की संख्या में लोग सड़कों पर हैं और शेख हसीना के देश छोड़कर जाने का जश्न मना रहे हैं।

बांग्लादेश में अब 18 सदस्यीय अंतरिम सरकार प्रस्तावित– न्यूज मीडिया ने बताया कि आर्मी ने देश की प्रमुख पार्टियों के नेताओं के साथ बैठक की है। 18 सदस्यीय अंतरिम सरकार प्रस्तावित की गई है। सेना इस सरकार को बनाएगी।

सेना प्रमुख ने कहा– पीएम हसीना ने इस्तीफा दिया, अंतरिम सरकार बनेगी– सेना प्रमुख जनरल वकार–उज–जमान ने कहा कि जो हत्या हुई उस पर न्याय होगा। हमने सभी दलों से बात की। हमारे बीच एक अच्छी बातचीत हुई है। उन्होंने बताया कि पीएम शेख हसीना ने इस्तीफा दे दिया है। हम अंतरिम सरकार का गठन करके शासन करेंगे।

प्रधानमंत्री ऑफिस में हजारों लोग घुसे– हजारों लोग पीएम ऑफिस में घुस गए हैं। वे यहां हाथ उठाकर जयकार कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर इससे जुड़े कई वीडियो वायरल हैं।

संसद सत्र का 11वां दिन

विपक्ष ने पूछा- सहारा ग्रुप के कितने निवेशकों को पैसा वापस मिला

वित्त मंत्री बोलीं- कोर्ट में जाकर पूछिए

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद के मानसून सत्र का सोमवार को 11वां दिन है। लोकसभा में आज प्रश्नकाल के दौरान सीकर (राजस्थान) से सीपीआई (एम) सांसद अमरा राम ने पूछा कि सहारा ग्रुप में निवेश करने वाले कितने लोगों को पैसा वापस किया और कितना किया? इस पर पहले वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने कहा कि अभी तक 138 करोड़ रुपए वापस किए जा चुके हैं। अमरा राम इस पर संतुष्ट नहीं हुए और दोबारा सवाल किया। इस बार वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण बोलीं- कोर्ट में जाकर पूछिए।

सूत्रों में दावा- पहले राज्य सभा में पेश होगा वक्फ बोर्ड संसोधन– वक्फ बोर्ड की पावर्स को सीमित करने के लिए सरकार वक्फ बोर्ड अमेंडमेंट बिल को सबसे पहले राज्य सभा में पेश कर सकती है। सूत्रों के अनुसार, ये कहा जा रहा है कि 12 अगस्त को बजट सत्र खत्म होने से पहले ही संशोधन प्रस्ताव पेश हो सकता है।

प्रजा का हाल जानने निकले महाकाल

1500 लोगों ने एक साथ 10 मिनट तक बजाए डमरू, बना वर्ल्ड रिकॉर्ड

उज्जैन (नप्र)। 5 अगस्त सावन का तीसरा सोमवार था। उज्जैन में महाकाल की सवारी निकाली जा रही है। सवारी में महाकाल चांदी की पालकी में चंद्रमौलेश्वर, तो हाथी पर मनमहेश के स्वरूप में विराजित हैं।

इसके पहले वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया गया। महाकाल लोक के पास शक्ति पथ पर 1500 लोगों ने एक साथ 10 मिनट तक डमरू बजाया। उज्जैन का नाम सबसे अधिक लोगों के डमरू बजाने के लिए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हो गया। गिनीज बुक से आए ऋषिनाथ ने इसका सर्टिफिकेट सांसद अनिल फिरोजिया, विधायक सतीश मालवीय और संतों को सौंपा।

डेढ़ लाख लोग कर चुके दर्शन

महाकाल मंदिर में सोमवार सुबह 11 बजे तक करीब डेढ़ लाख श्रद्धालु दर्शन कर चुके हैं। खंडवा के ओंकारेश्वर में भी रात से ही श्रद्धालुओं का पहुंचना शुरू हो गया था। छिंदवाड़ा के पातालेश्वर मंदिर में तड़के 3 बजे भगवान शिव का तीर्थ जल से अभिषेक हुआ। भोपाल के भोजपुर, बड़ वाले महादेव और गुफा मंदिर में भी पूजा-अर्चना की जा रही है।

तीन दिन से चल रही थी प्रैक्टिस

इससे पहले, 488 लोगों द्वारा एक साथ डमरू बजाने का रिकॉर्ड फेडरेशन ऑफ न्यूयार्क के नाम 2021 में दर्ज किया गया था। महापौर मुकेश टटवाल ने बताया कि इसके लिए पिछले तीन दिन से दो सत्रों में प्रैक्टिस चल रही थी। आज 25-25 डमरू वादकों के अलग-अलग दल बनाए गए थे। यह दल शाम को सवारी के दौरान डमरू बजाते हुए साथ चलेगा।

डमरू उत्सव में उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा, मंत्री गोविंद सिंह राजपूत शामिल हुए। इसके बाद शाम को सवारी में महाकाल मंदिर से शिप्रा तक चले। पालकी पूजन किया। इनके साथ, सांसद अनिल फिरोजिया, विधायक सतीश मालवीय, कमिश्नर संजय गुप्ता, आई जी संतोष सिंह, नगर निगम कमिश्नर आशीष पाठक, महापौर मुकेश टटवाल, मंदिर के राम पुजारी, आशीष पुजारी ने भी डमरू बजाया।

सुप्रभात

मधु घट छलके अम्बर से ।
पावस की पावन ऋतु आई,
मेघ घिरे बरसे ॥
मधु घट छलके अम्बर से ॥
प्रियतम पाहुन मेघ पधारे ।
विरहिन धरती के अँगनारे ।
पोर पोर आनंद समाया,
प्राण प्राण सरसे ॥
मधु घट छलके अम्बर से ॥
बिखराये अलकें ऋतु कामिनि ।
घन घन बीच निरत रत दामिनि ।
ढम ढम मेघ मृदंग बजायें,
नद निर्झर हरसे ॥
मधु घट छलके अम्बर से ॥
पहन हरी चूनर इतराये ।
धरती नव श्रंगार सजाये ।
आलिंगन को झुका व्योम पर,
रुका किसी डर से ॥
मधु घट छलके अम्बर से ॥

–डॉ. राम वल्लभ आचार्य

सीबीआई की गिरफ्तारी के खिलाफ केजरीवाल की याचिका खारिज

हाईकोर्ट बोला- ऐसा नहीं लगता उनकी गिरफ्तारी बिना वजह हुई

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने सोमवार (5 अगस्त) को अरविंद केजरीवाल की सीबीआईकी गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका खारिज कर दी। साथ ही जमानत याचिका के लिए निचली अदालत जाने को कहा है।

म.प्र. में बेतवा-नर्मदा उफनाईं, उ.प्र. में 5 और राजस्थान में 4 की जान गई

12 राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। देशभर में बारिश का दौर जारी है। मौसम विभाग ने आज मध्य प्रदेश, राजस्थान सहित 12 राज्यों में बहुत भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। एमपी के विदिशा में बेतवा नदी का पानी पुल से ऊपर बह रहा है। नर्मदापुरम् में नर्मदा खतरे के निशान के करीब है।

यूपी में बारिश से 6 जिले बाढ़ में डूबे –उत्तर प्रदेश में बारिश से 6 जिले बाढ़ में डूबे हुए हैं। बारिश से जुड़ी घटनाओं में 5 की मौत हो गई। बाढ़ से घिरे जिलों में बलिया, लखीमपुर खीरी, फर्रुखाबाद, सीतापुर, बिजनौर और बाराबंकी शामिल हैं।

बदायूं में कछला ब्रिज पर गंगा नदी खतरे के निशान से ऊपर बह रही है। ललितपुर में 6 बांधों के गेट खोले गए।

- **महाराष्ट्र के पुणे में हालात खराब, मिजोरम में हफ्ते भर बारिश का अलर्ट–** बीते दो दिन से पुणे जिले में भारी बारिश हो रही है। इसके कारण खड़कवासला, मुलशी, पवना और दूसरे बांध ओवरफ्लो हैं। खडकवासला बांध से 35 हजार क्यूसेक (क्यूविक पर सेकेंड) पानी छोड़ा गया।
- **23 राज्यों में आज जारी रहेगा बारिश का दौर–** आईएमडी ने आज राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, गोवा, महाराष्ट्र, असम, मेघालय, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, सिक्किम, जम्मू–कश्मीर, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, अरुणाचल प्रदेश, केरल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु में भारी बारिश होने की संभावना जताई है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 38.5°c
न्यूनतम 33°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ मंगलवार, 06 अगस्त 2024

> जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
>
> चाणक्य नीति

बापू मालदेव राणा की जयंती धूमधाम से मनाई गई

भोपाल। युवा मेहर (मेर) समाज ने बापू मालदेव राणा की 139वीं जयंती रविवार को भोपाल के बैरसिया रोड स्थित निजी पैलेस में धूमधाम से मनाई। कार्यक्रम में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत सदस्यों ने पौधरोपण कर उनके संरक्षण का संकल्प भी लिया।

प्रदेश अध्यक्ष मनोहर मेहरा ने कहा कि मेहर जागृति मंच, मेहर मेर समाज पूज्य बापू के बताए मार्ग पर चलकर समाज को संस्कृति के साथ एकजुट करने का काम करता रहेगा।

जनपद अध्यक्ष बैरसिया कुबेर सिंह गुर्जर ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि बापू मालदेव राणा की जन्म जयंती पर समाज के लोगों को एकत्रित कर पूरे समाज में संगठन का भाव जागृत किया है। इस तरह के आयोजन से संगठन लगातार मजबूत होगा और एक नई दिशा मिलेगी उन्होंने कहा की समाज को एक अलग पहचान दिलाने वाले प्रदेश अध्यक्ष मनोहर मेहरा जैसे वरिष्ठ समाजसेवी ने जिस प्रकार से समाज ही नही मध्य प्रदेश में समाज सेवा करने का बीड़ा उठाया है, उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। युवा मेहर समाज संगठन बैरसिया के

युवा मेहर समाज ने भोपाल में किया पौधरोपण

अध्यक्ष मुकेश मेहर ने कार्यक्रम में आए सभी अतिथियों और समाज के बंधुओं का स्वागत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व जनपद अध्यक्ष किशनलाल मेहर ने की।

कार्यक्रम में विशेष अतिथि जनपद अध्यक्ष प्रतिनिधि कुबेर सिंह गुर्जर, मुख्य अतिथि मेहर मेर समाज के प्रदेश अध्यक्ष मनोहर मेहरा, पूर्व जनपद अध्यक्ष कमलेश मेहर, मेहर छात्रावास समिति विदिशा अध्यक्ष मोहन सिंह मेहर, राधा कृष्ण मंदिर समिति नारियलखेड़ा अध्यक्ष भगवान सिंह बड़गोती, मेहर जागृति मंच प्रदेश उपाध्यक्ष ब्रजकिशोर मेहर, सह सचिव राजू मेहर, कोषाध्यक्ष रोबिन मेहर, वरिष्ठ सलाहकार शिक्षक रामबाबू मेहर, रामचरण गोयल,समाजसेवी कन्हैया लाल मेहर, प्रयाग्ज सिंह मेहर, किशन लाल आर्य, काशीराम मेहर, मनीष मेहर, बाबूलाल मेहर, पार्षद दीपक मेहर शमशाबाद, आयोजन समिति पदाधिकारी जीवन सिंह मेहर, प्रदीप गोयल, बलराम मेहर, हाकम सिंह मेहर,तोरन सिंह मेहर, उधम सिंह मेहर, ओम मेहर एवं समाज के सामाजिक बंधु एवं मातृ शक्ति मौजूद रहे।

संक्षिप्त समाचार

शेयर बाजार में हाहाकार...

सेंसेक्स 800 अंक गिरा, निवेशकों के 4 लाख करोड़ स्वाहा

मुंबई (एजेंसी)। अमेरिका में मंदी की आशंका के चलते हफ्ते के पहले कारोबारी दिन सोमवार 5 अगस्त को सेंसेक्स 2,222 अंकों (2.74 प्रतिशत) की गिरावट के साथ 78,759 के

स्तर पर बंद हुआ। वहीं, निफ्टी में भी 662 अंक (2.68 प्रतिशत) की गिरावट रही। यह 24,055 के स्तर पर बंद हुआ। इस गिरावट से बीएसई लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैप 10.24 लाख करोड़ रुपये घटकर 446.92 लाख करोड़ रुपये रह गया। निफ्टी 10 अपनी 20 दिन के मूविंग एवरेज से नीचे चला गया जो दो महीने से अधिक समय में इसकी एक दिन में सबसे बड़ी गिरावट है।

चिराग पासवान से सहमत नहीं जीतन राम मांझी

आरक्षण के मुद्दे पर एनडीए में अलग सुर ने बढ़ाई चिंता

पटना (एजेंसी)। बिहार में गया से सांसद और पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने छुआछूत के सवाल को लेकर सोमवार को कहा कि स्वार्थी लोग वैसा कर रहे हैं। भुइयां, डोम जैसी

जातियों का नाम गिनाते हुए पूर्व सीएम मांझी ने सवाल किया कि इनमें कितने आईएएस हैं, कितने चीफ इंजीनियर हैं? बता दें कि आरक्षण के मुद्दे पर जीतन राम मांझी और इससे पहले सामने आए चिराग पासवान के बयान से प्रदेश में एनडीए की चिंता बढ़ सकती है।

लखनऊ बैड टच का मुख्य आरोपी गिरफ्तार... नाबालिग निकला

कानपुर में मौसी के घर छिपा था; 52 थानों की पुलिस, 5 आईपीएस तलाश रहे थे

लखनऊ (एजेंसी)। लखनऊ में बारिश के दौरान युवती से बैड टच का मुख्य आरोपी गिरफ्तार हो गया। आरोपी नाबालिग है। वह 5 दिन से कानपुर में अपनी मौसी के घर छिपा

था। उसकी तलाश 5 आईपीएस और लखनऊ के 52 थानों की पुलिस कर रही थी। शुरुआती जांच में पता चला कि आरोपी घटना के बाद पुलिस एक्शन का पता चलते ही कानपुर भाग गया था। वह लगातार यहां के अपडेट्स दोस्तों से ले रहा था। गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने आरोपी की रिमांड मांगी, लेकिन नाबालिग होने से कोर्ट ने इनकार कर दिया।

सुप्रीम कोर्ट बोला-

कोचिंग संस्थान डेथ चैम्बर बन चुके हैं

- ये स्टूडेंट्स की जान को खतरे में डाल रहे, केंद्र-दिल्ली सरकार को नोटिस
- हम कोचिंग सेंटर्स की सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के राउ आईएएस कोचिंग के बेसमेंट में चल रही लाइब्रेरी में पानी भरने से 27 जुलाई को तीन स्टूडेंट्स की मौत हो गई थी। सुप्रीम कोर्ट में सोमवार को जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस उज्वल भुइयां की बेंच ने दिल्ली के कोचिंग सेंटर्स को डेथ चैम्बर बताया।

बेंच ने कहा- हम कोचिंग सेटर्स की सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं। कोचिंग सेंटर्स बच्चों की जिंदगी के साथ खेल रहे हैं। कोर्ट ने केंद्र सरकार और दिल्ली के चीफ सेक्रेटरी को नोटिस जारी कर पूछा कि कोचिंग सेंटर्स में क्या सेफ्टी के नियम लागू किए गए हैं?

कोर्ट ने कहा कि हमारा ये सोचना है कि अगर कोचिंग सेंटर सेफ्टी नॉर्म को पूरा नहीं करते तो इनको ऑनलाइन मोड में पढ़ाई शुरू कर देनी चाहिए। फिलहाल हम ये नहीं कर रहे हैं। कोर्ट ने केंद्र, दिल्ली सरकार और एमसीडी को नोटिस जारी कर सुरक्षा की जानकारी मांगी है।

अदालत के आदेशों पर अमल नहीं, अफसर जिम्मेदारी एक-दूसरे पर डाल रहे- बेसिक इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिए सिविल एजेंसियों के पास कोई पैसा नहीं है। दिल्ली में भौतिक बुनियादी ढांचा 75 साल पहले बना था, जो नाकाफी है। इसका रखरखाव भी ठीक से नहीं किया गया। हाल ही में हुए हादसों से पता चलता है कि अदालत के आदेशों का पालन नहीं किया जाता। उनकी उपेक्षा की जाती है।

- सुप्रीम कोर्ट ने ममता सरकार को भेजा नोटिस, कहा-

77 मुस्लिम जातियों को कैसे दे दिया ओबीसी कोटा

नई दिल्ली (एजेंसी)। बंगाल में 77 मुस्लिम जातियों को आरक्षण देने के फैसले पर सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को ममता सरकार को नोटिस जारी किया है। कोर्ट ने कलकत्ता उच्च न्यायालय के फैसले के खिलाफ पश्चिम बंगाल सरकार की याचिका पर ये नोटिस दिया है।

हाईकोर्ट ने लगाई थी रोक

हाईकोर्ट ने पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा 77 मुस्लिम जातियों को अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के रूप में वर्गीकृत करने को रद्द कर दिया था और 2010 के बाद पश्चिम बंगाल में जारी सभी अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) प्रमाण पत्र रद्द कर दिए थे।

सरकार से मांगा जवाब

सुप्रीम कोर्ट ने नोटिस जारी कर ममता सरकार से जवाब मांगा है कि उसने किस आधार पर मुस्लिम जातियों को ये कोटा दिया।

कांग्रेस ने कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान को टोका तो खोल दिया पूरा चिट्ठा

छेड़ोगे तो छोडूंगा नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस को किसान विरोधी करार देते हुए कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सोमवार को राजनीतिक दलों से अपील की कि वे

किसानों को वोट बैंक मानना बंद करें तथा उनके साथ इंसान की तरह व्यवहार करें। उच्च सदन में कृषि मंत्रालय के कामकाज पर हुई चर्चा पर अधूरे रह गए अपने जवाब को आगे बढ़ाते हुए कृषि मंत्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि से न केवल छोटे एवं सीमांत किसान सशक्त हुए बल्कि उनका सम्मान भी बढ़ा है।

चौहान जब जवाब दे रहे थे तब कांग्रेस के रणदीप सिंह सुरजेवाला ने उन्हें कई बार बाधित करना चाहा और भाजपा सरकार के ऊपर किसानों पर गोलियां चलाने का आरोप लगाया। कृषि मंत्री ने कहा, ''मैंने पहले ही कहा था कि मुझे छेड़ो मत। अगर छेड़ा तो छोडूंगा नहीं। उन्होंने मध्य प्रदेश में पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के शासनकाल सहित कांग्रेस की विभिन्न सरकारों के शासन काल में किसानों पर गोलियां चलाए जाने की विभिन्न घटनाओं का हवाला दिया।

कांग्रेस को याद दिलाई किसानों पर गोलीबारी की घटनाएं

कांग्रेस सदस्यों ने कृषि मंत्री के जवाब पर विरोध जताते हुए सदन से वॉकआउट कर दिया। सदन से बाहर जा रहे कांग्रेस सदस्यों को इंगित करते हुए चौहान ने कहा कि यह भी सुनकर जाइये कि 23 अगस्त 1995 को हरियाणा में चलाई गई गोलियों से छह किसान मारे गए थे। इस बीच सभापति जगदीप धनखड़ ने कृषि मंत्री को रोकते हुए कहा कि यह बहुत ही ''दर्दनाक और दुर्भाग्यपूर्ण'' है.....। उन्होंने कहा कि जब सदन में देश के सबसे महत्वपूर्ण वर्ग किसानों के बारे में चर्चा हो रही हो तो सदन में हर सदस्य का यह मौलिक कर्तव्य है कि वह चर्चा में गंभीरता से भाग ले। धनखड़ ने कहा कि जिन कांग्रेस सदस्य रणदीप सुरजेवाला ने इस चर्चा की शुरुआत की थी, उन्होंने किसानों के हितों को तिलांजलि देते हुए, संजीदगी का परित्याग करते हुए, मंत्री के भाषण में जो अवरोध पैदा करने का प्रयत्न किया, ''उसका मैं खंडन करता हूं, प्रतिकार करता हूं, निंदा करता हूं। कृषि मंत्री ने सभी राजनीतिक दलों से अपील की कि वे किसानों को वोट बैंक न मानकर उनके साथ इंसान की तरह व्यवहार करें। उन्होंने स्वीकार किया कि कृषि क्षेत्र में कुछ समस्याएं हैं।

रियल दिखने के लिए रील बनाई गई

चौहान ने कहा कि जो दिल में होता है, वही जुबां पर आता है। उन्होंने कहा, ''इनके (कांग्रेस के नेताओं के) दिल में किसान नहीं था, इसलिए उनकी जुबां पर नहीं आया और मोदी जी के दिल में किसान है इसलिए उनकी जुबां पर वह बार बार आता है।%% उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी का नाम लिये बिना उनके द्वारा देश में निकाली गयी यात्राओं का उल्लेख किया और कहा कि जब यह यात्रा हरियाणा के सोनीपत पहुंची तो 'रियल दिखने के लिए रील बनाई गई। कृषि मंत्री ने अपनी जेब से एक पेन ड्राइव निकाल कर कहा कि वह उसकी पूरी सीडी सदन के पटल पर रखकर यह कहना चाहते हैं कि 'वे किसानों के नाम पर नाटक करते हैं। इस पर सभापति ने कहा कि वह इसे सदन के पटल पर रखकर इसकी प्रामाणिकता की पुष्टि करें।

रक्सौल-एलटीटी के लिए 6 अगस्त से चलेगी स्पेशल ट्रेन

एमपी के सतना, कटनी, जबलपुर और इटारसी स्टेशन पर होगा स्टॉपेज

भोपाल (नप्र)। रेलवे ने रक्सौल-लोकमान्य तिलक टर्मिनस-रक्सौल के बीच एक-एक ट्रिप सुपर फास्ट एक्सप्रेस स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया है। यह स्पेशल ट्रेन पश्चिम मध्य रेलवे के सतना, कटनी, जबलपुर और इटारसी स्टेशन पर हाल्ट लेकर जाएगी।

इन स्टेशनों पर होगा स्टॉपेज- यह गाड़ी रास्ते में दोनों दिशाओं में बैरगनियां, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, हाजीपुर, पाटलिपुत्र, आरा, बक्सर, पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन, मिर्जापुर, प्रयागराज छिवकी, सतना, कटनी, जबलपुर, इटारसी, खंडवा, भुसावल, मनमाड़ एवं कल्याण स्टेशनों पर रुकेगी।

ऐसा रहेगा शेड्यूल

गाड़ी संख्या 05557 रक्सौल-एलटीटी सुपर फास्ट एक्सप्रेस स्पेशल ट्रेन 6 अगस्त को रक्सौल स्टेशन से शाम 7:15 बजे रवाना होकर तीसरे दिन सुबह 5:50 बजे लोकमान्य तिलक टर्मिनस स्टेशन पहुंचेगी।

इसी प्रकार गाड़ी संख्या 05558 एलटीटी-रक्सौल सुपरफास्ट एक्सप्रेस स्पेशल ट्रेन 8 अगस्त को एलटीटी स्टेशन से सुबह 7:55 बजे प्रस्थान कर दूसरे दिन शाम 6:50 बजे रक्सौल स्टेशन पहुंचेगी।

चलती बस में आग, खिड़कियों से कूदे लोग

- बच्चों को भी विंडो से बाहर निकाला, सिलीगुड़ी से पूर्णिया आ रही बस में सवार थे 20 यात्री

किशनगंज (बिहार) (एजेंसी)। किशनगंज में सोमवार दोपहर सिलीगुड़ी से पूर्णिया जा रही बस में अचानक आग लग गई। बस में करीब 20 यात्री सवार थे। बस जैसे ही खगड़ा ओवरब्रिज पर पहुंची गियर बॉक्स से अचानक धुआं निकलने लगा। धीरे-धीरे बस में आग लगने लगी। यात्रियों ने बताया कि खिड़कियों के कूदकर लोगों ने अपनी जान बचाई। बच्चों को भी खिड़कियों से बाहर निकाला गया। मामला खगड़ा ओवरब्रिज एनएच-27 का है। हादसे में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है।

ताजमहल में घुसकर महिला ने मुख्य गुबंद पर भगवा लहराया, सावन सोमवार पर गंगा जल चढ़ाया

आगरा (एजेंसी)। आगरा के ताजमहल में सावन के सोमवार पर महिला ने मुख्य गुंबद के ऊपर जल चढ़ाया। उसने भगवा कपड़ा भी लहराया। महिला ने दावा किया कि वह बोतल में गंगाजल लेकर गई थी। सूचना मिलते ही सीआईएसएफ के जवान पहुंचे, उन्हें देखते ही महिला भागने लगी। जवानों ने महिला को दौड़ाकर पकड़ लिया। महिला की पहचान अखिल भारत हिंदू महासभा की आगरा जिलाध्यक्ष मीरा राठौर के रूप में हुई है।

ऑपरेशन 'दूल्हे राजा' से अरेस्ट हुआ शख्स

- ओडिशा में दो महिलाओं से ठगी करने की आई शिकायत
- पकड़ने के लिए पुलिस ने चलाया ऑपरेशन दूल्हा राजा
- दुबई में बैठे आरोपी को जाल में फंसाकर लाए भारत

5 पत्नियां, दिल्ली-यूपी समेत 7 राज्यों में 49 महिलाओं से शादी का वादा

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा के भुवनेश्वर में एक हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां पुलिस ने एक शातिर ठग सत्यजीत सामल को गिरफ्तार किया है। हालांकि पुलिस ने सत्यजीत सामल को खुद को पुलिस अफसर बताकर दो महिलाओं से ठगी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया। फरवरी में कैपिटल पुलिस थाने में दो महिलाओं ने यह ठगी की शिकायत दर्ज कराई थी। एक महिला को फंसाकर सत्यजीत ने उससे अपने लिए 8.15 लाख रुपये की कार खरीदी। कारोबार के नाम पर 36 लाख रुपये भी लिए। एक दूसरी महिला को फंसाकर उसने 8.60 लाख रुपये और एक मोटरसाइकिल ऐंठी थी। इस मामले की जांच पुलिस ने की तो जो सामने आया, उससे उनके पांव तले जमीन खिसक गई। सत्यजीत सामल ने 5 शादियां कर रखी थीं। इतना ही नहीं, इन पांच शादियों के अलावा उसने 49 महिलाओं से शादी का वादा कर रखा था और उनसे अफेयर चला रहा था।

चलाया मिशन दूल्हे राजा

पुलिस ने सत्यजीत सामल पर लगे आरोप का पता लगाने और उसे फंसाने के लिए एक जाल बिछाया। एक खूबसूरत महिला अधिकारी की मदद ली गई। इस ऑपरेशन को 'दूल्हे राजा' नाम दिया गया। महिला पुलिस अधिकारी ने मैट्रिमोनियल साइट पर प्रोफाइल बनाई। सत्यजीत को फंसाया, हालांकि सत्यजीत को लग रहा था कि उससे एक और महिला फंस गई है। दोनों की शादी को लेकर बात हुई। फिर महिला पुलिस ने उसे मिलने बुलाया। जैसे ही सत्यजीत वहां आया आसपास मौजूद पुलिस की टीम ने उसे धर दबोचा।

इंदौर नगर निगम फर्जी बिल घोटाले में ईडी का छापा

मास्टर माइंड अभय राठौर, ऑडिटर अनिल गर्ग के ठिकानों सहित 12 जगह छापेमारी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर नगर निगम के 125 करोड़ रुपए के फर्जी बिल घोटाले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की एंट्री हो गई है। ईडी ने सोमवार सुबह घोटाले के मास्टर माइंड अभय राठौर, संयुक्त संचालक (ऑडिट) अनिल कुमार गर्ग के ठिकानों सहित 12 जगह छापे मारे हैं। राठौर फिलहाल जेल में हैं। छापे की कार्रवाई की शुरुआत गर्ग के निवास 184-ए महालक्ष्मी नगर 'ओम सुख सांई एवेन्यू' से हुई। परिवार के लोग टीम को देखकर घबरा गए और वे जानकारी देने से बचते रहे। टीम ने मास्टर माइंड अभय राठौर और उसके बहनोई के भी घर छापे मारने की सूचना है। इस दौरान घर पर सिर्फ महिलाएं ही थीं। अन्य आरोपियों और उनसे जुड़े लोगों के ठिकानों पर भी श्रष्ठ की टीम पहुंची है।

निगम घोटाले के इन आरोपियों के यहां भी पहुंची ईडी की टीम

निगम के फर्जी बिल घोटाले में पुलिस ने करीब 20 आरोपियों के खिलाफ अलग-अलग के दर्ज किए थे। इनमें ठेकेदारों के अलावा, निगम अधिकारी, कर्मचारी आदि शामिल हैं। ईडी द्वारा रेणु वडेरा निवासी 6 आशीष नगर, मोहम्मद जाकिर निवासी 147 मदीना नगर, राहुल वडेरा निवासी 2 आशीष नगर, राजकुमार पिता पन्नालाल साल्वी निवासी 78 अम्बिकापुरी हरीश श्रीवास्तव निवासी 55 सुखदेवनगर, प्रो. एहतेशाम पिता बिलकिस खान निवासी 128 माणिक बाग, जाहिद खान निवासी 101 सकीना अपार्टमेंट अशोका कॉलोनी, मोहम्मद साजिद निवासी मदीना नगर, मोहम्मद सिद्दीकी निवासी मदीना नगर), उदयसिंह पिता रामनरेश सिंह भदौरिया निवासी 31-सी सुखलिया, मुरलीधर पिता चंद्रशेखर निवासी 697 शिव सिटी राऊ, मौसम व्यास के ठिकानों पर भी छानबीन की सूचना है। इस पूरे घोटाले में राठौर ने खुद की कोई भूमिका नहीं होने की बात कही है। जिस सेक्शन में घोटाला होना बताया है उसमें खुद के नहीं होने के बात कही है। सोमवार सुबह अनिल कमार गर्ग के महालक्ष्मी नगर स्थित घर पर ईडी की टीम पहुंची। यहां उसके पूरे परिवार को बाहर जाने से रोक दिया गया। जबकि मीडिया को राठौर के परिवार ने कुछ भी बताने से इनकार कर दिया।

बेटे के ससुराल से गिरफ्तार हुआ था राठौर

पुलिस को जानकारी मिली कि उसके बेटे का उप्र में ससुराल है। इसके साथ ही अन्य रिश्तेदार भी उप्र के कई शहरों में है। इस पर पुलिस ने सूत्र तलाशे और एटा में एक मकान पर दबिश दी। यहां राठौर ने पुलिस से हुज्जत करते हुए गिरफ्तारी वारंट दिखाने को कहा। पुलिस ने उसे मौके से गिरफ्तार किया था। वह फिलहाल जेल में है। मोहम्मद जाकिर, मोहम्मद साजिद, मोहम्मद सिद्दीकी निवासी मदीना नगर के घर भी ईडी पहुंची। यहां सुरक्षा गार्ड तैनात किए गए हैं। अंदर टीम दस्तावेजों की जांच कर रही है।

30 करोड़ रु. का भुगतान निगम के खाते से

पंकज पांडे (डीसीपी, जोन-3) ने बताया कि अब तक 58 फाइलों की जांच में 60 करोड़ का घपला निगम अधिकारियों-ठेकेदारों ने किया है। इनमें से 30 करोड़ निगम के खाते से भुगतान हो चुके हैं। अभी कई फाइलों की जांच चल रही है। राठौर का रिमांड लेने के बाद और खुलासे होने की उम्मीद है। मामले में पुलिस अब तक राठौर सहित नौ आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है। इनमें से ठेकेदार मो. साजिद, रेणु वडेरा, सब इंजीनियर उदय सिसौदिया, कम्प्यूटर ऑपरेटर चेतन भदौरिया और कर्मचारी मुरलीधर जेल जा चुके हैं।

एलायंस एयर ने घटाई फ्लाइट्स

इंदौर से दिल्ली, मुंबई और ग्वालियर के लिए नहीं मिल रहे यात्री

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर से दिल्ली, मुंबई और ग्वालियर के लिए फ्लाइटों का संचालन करने वाली एलायंस एयर ने इंदौर में फ्लाइट की संख्या कम कर दी है। बताया जा रहा है कि कंपनी यह निर्णय यात्रियों की कमी के कारण लिया है। कंपनी द्वारा पिछले साल विंटर शेड्यूल में इंदौर से मुंबई के बीच सप्ताह में तीन दिन उड़ानें शुरू की थीं। यह उड़ानें सोमवार, मंगलवार और गुरुवार को संचालित होती थीं, लेकिन अब कंपनी ने इन्हें सिर्फ सोमवार और शनिवार को चलाने का निर्णय लिया है। कंपनी की ग्वालियर उड़ान जो सप्ताह में चार दिन संचालित होती थी, उसे 17 अगस्त तक के लिए बंद कर दिया गया है।

18 अगस्त से यह उड़ान सप्ताह में दो दिन रविवार और बुधवार को संचालित होगी। इसी तरह दिल्ली की उड़ान को भी सप्ताह में एक दिन कर दिया है। एयरपोर्ट अधिकारियों से मिली जानकारी के अनुसार कंपनी की उड़ानें लगातार लेट चलती हैं, जिसके कारण यात्री इसमें सफर करने से बचते हैं। ऐसे में पिछले कुछ समय से लगातार कंपनी को पर्याप्त यात्री नहीं मिल पा रहे थे, जिसके चलते कई बार कंपनी ने अपनी उड़ानों को निरस्त भी किया। यात्रियों का घटता रिस्पांस देखते हुए अब कंपनी ने अपनी उड़ानों के फेरे कम कर दिए हैं।

इंदौर में स्टूडेंट्स को मिलेगी लाइब्रेरी की सुविधा

इंदौर (एजेंसी)। प्रदेश की आर्थिक राजधानी इंदौर में बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स कॉम्पिटिटिव एग्जाम की तैयारी कर रहे है। इनमें वे स्टूडेंट्स भी शामिल है, जो बाहर से आकर इंदौर में रहकर एग्जाम की तैयारी कर रहे है। अब इन स्टूडेंट्स को जल्द ही सुविधायुक्त लाइब्रेरी की सौगात मिलने वाली है। कॉम्पिटिटिव एग्जाम की तैयारी करने वाले स्टूडेंट्स के लिए लाइब्रेरी स्थापित की जाएगी। शहर में बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स भंवरकुआ क्षेत्र में रहते है। भंवरकुआ क्षेत्र में लाइब्रेरी जल्द शुरू की जाएगी। कलेक्टर आशीष सिंह ने सोमवार को हुई टीएल बैठक में इसकी जानकारी दी। इस बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी सिद्धार्थ जैन, अपर कलेक्टर गौरव बेनल, इंदौर विकास प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालन अधिकारी आर.पी.अहिरवार, अपर कलेक्टर रोशन राय, निशा डामोर और राजेंद्र रघुवंशी सहित कई अधिकारी मौजूद थे।

तीन लुटेरे पकड़ाए तब हुई मोबाइल लूट की एफआईआर

पहले मॉर्निंग वॉक पर निकले डॉक्टर, फिर सब्जी विक्रेता महिला को लूटा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के मल्हारगंज में लुटेरों के पकड़ाने के बाद एफआईआर दर्ज की गई। आरोपी दो दिन पहले सदर बाजार पुलिस के हत्थे चढ़े थे। उन्होंने यहां डॉक्टर का मॉर्निंग वॉक के दौरान मोबाइल लूटा था। इसके अलावा आरोपियों ने 60 फीट रोड से भी मोबाइल लूटा। लेकिन पीड़ित उक्त मामले में थाने नहीं पहुंचा। मल्हारगंज पुलिस ने रेखा पति राजेश कुमार शर्मा निवासी नगीन नगर की शिकायत पर बाइक सवार तीन लुटेरों पर केस दर्ज किया है। लुटेरे आनंद भालसे, गोलू वर्मा और निखिल हार्डिया सदर बाजार पुलिस की गिरफ्त में हैं। रेखा ने अपनी शिकायत में बताया था कि वह मजदूरी करती है। लक्ष्मीबाई मंडी से अपने घर नगीन नगर जा रही थी। तब आरोपियों ने शुक्रवार शाम 6.30 बजे वारदात को अजांम दिया। उसने मामले में पुलिस से शिकायत की। सदर बाजार पुलिस ने जब आरोपी पकड़ लिए तो उन्होंने रेखा के साथ मोबाइल लूट की वारदात कबूली। इसके बाद पुलिस ने रेखा को बुलाकर मोबाइल चोरी का केस दर्ज कर लिया। आरोपियों ने एरोड्रम और मल्हारगंज की सीमा के बीच एक और मोबाइल लूट की वारदात की थी। लेकिन उसका पीड़ित थाने ही नहीं पहुंचा।

देर रात युवक ने किया सुसाइड

घर आकर सोने चला गया, सुबह परिवार ने देखा तो फंदे पर लटका था

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के एमआईजी इलाके में रहने वाले एक युवक ने सुसाइड कर लिया। रात में वह घर आया और सोने चला गया। सुबह परिवार के लोग जागे तो उसे फंदे पर लटके देखा। जिसके बाद पुलिस को सूचना दी। एमआईजी पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक रोहन पुत्र जगदीश यादव निवासी सोमनाथ की चाल ने फांसी लगाकर जान दे दी। सुबह उसकी भाभी ने फंदे पर शव लटके देखा। इसके बाद रिश्तेदारों को सूचना दी। रिश्तेदार श्रीपाल ने बताया कि रात रोहन घर आया तब बड़े भाई के बच्चों को खिला रहा था। इसके बाद वह खाना खाकर चला गया। देर रात कब आकर सो गया, इसकी परिवार को जानकारी नहीं। रोहन के परिवार में बड़ा भाई और मां भी साथ रहते हैं। वहीं छोटा भाई परिवार के साथ अलग रहता है। पुलिस मामले में जांच कर रही है।

बर्तन से भरी बोलेरो ले भागा

एरोड्रम पुलिस ने चोर को गाड़ी सहित पकड़ा, पूछताछ जारी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के एरोड्रम में एक कैटरिंग संचालक की बर्तन से भरी बोलेरो चोरी हो गई। उसने एरोड्रम थाने जाकर इस मामले में शिकायत की। पुलिस ने कुछ ही घंटों में छानबीन करते हुए उक्त गाड़ी को पकड़ लिया। आरोपी से पूछताछ की जा रही है। एरोड्रम पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक कैलाश पुत्र दुलीचंद कुमावत निवासी अशोक नगर की शिकायत पर अज्ञात बदमाश के खिलाफ चोरी के मामले में केस दर्ज किया गया था। कैलाश ने बताया था कि बदमाश बोलेरो पिकअप गाड़ी को बाबा श्री गार्डन के सामने से चुराकर ले गए। पुलिस ने इस मामले में शुभम सोंलकी निवासी भूरी को पकड़ा है। आरोपी से बोलेरो भी बरामद की गई है। कैलाश ने अपनी शिकायत में बताया था कि वह केटरीग का काम करता है। उसकी बोलरो गाड़ी शनिवार रात 11 बजे के लगभग गोदाम पर बर्तनों से भरकर गोदाम में लॉक कर खड़ी की थी। इसके बाद रात करीब 2 बजे गोदाम से बाहर आकर देखा तो गाड़ी जगह पर नही थी। तुरंत मामले में पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने रविवार को गाड़ी ढूंढ निकाली। इस मामले में आरोपी शुभम को पकड़कर उससे पूछताछ की जा रही है।

निजी अस्पताल की नर्स के साथ दुष्कर्म

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में एक नर्स से रेप का मामला सामने आया है। 29 साल की नर्स ने सचिन सैंधव निवासी देवास पर रेप का केस दर्ज किया है। टीआई सचिन मेढ़ा ने बताया कि नर्स सचिन से उसकी एमपी ऑनलाइन शॉप पर करीब तीन साल पहले मिली थी। यहां वह कामकाज के सिलसिले में अकसर आती रहती थी। इसके चलते दोनों ने एक-दूसरे का मोबाइल नंबर लिया और बात करने लगे। डबल चौकी स्थित निजी अस्पताल में नौकरी करने के लिए पीड़िता ने देवास से शिफ्ट होकर आजाद नगर में किराए का घर ले लिया। यहां वह अगस्त 2023 से रह रही है। इसके बाद सचिन देवास से फोटोग्राफी सीखने इंदौर आने लगा। और पीड़िता के यहीं रुकता था। पीड़िता ने बता कि सचिन सितंबर 2023 में तीन इमली इलाके की होटल सेलिब्रेशन में मुझे ले गया। यहां उसने कहा कि वह मुझे पसंद करता है और शादी करना चाहता है। इसके बाद उसने मेरे मना करने के बाद भी जबरदस्ती संबंध बनाए।

पापा नशे में, मां मोबाइल में बिजी

इंदौर में बच्चे बोले- हमें पीटा, खाना नहीं दिया, अब उनके साथ नहीं रहना

हाईकोर्ट ने सुनवाई के बाद जिला अदालत में माता-पिता के खिलाफ ट्रायल पर अंतरिम रोक लगाई

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में अपने माता-पिता पर एफआईआर दर्ज कराने वाले बच्चे अब उनके साथ रहने को भी तैयार नहीं हैं। मीडिया से बच्चे बोले, माता-पिता दोनों हमें मारते हैं। टॉर्चर करते हैं और अंधेरे कमरे में बंद कर देते हैं। पिता नशे में रहते हैं और मां सोशल मीडिया पर पूरा दिन बिताती है। 21 वर्षीय बेटी का आरोप है कि प्रताड़ना से 8 साल का छोटा भाई रोता तो मां उसके मुंह पर हाथ रखकर दबा देती थी। उसे गरम चिमटे से डराती और कहती थी- पैदा ही क्यों हुआ? मर क्यों नहीं जाता।

बेटी ने बताया- पापा ने कभी जॉब नहीं की। दादाजी की सरकारी नौकरी थी। उन्हें अच्छा वेतन मिलता था। वे

दादाजी का पूरा पैसा भी शराब पीने में खर्च कर देते थे। 2020 में जब दादाजी का निधन हुआ तो पिताजी को पैसे मिलना बंद हो गए। इसके बाद तो उन्होंने और टॉर्चर करना शुरू कर दिया। इसके बाद 2021 में हम बुआ के पास आ गए। तब से दोनों बुआ के घर पर ही रहते हैं। दरअसल, माता-पिता की शिकायत लेकर दोनों भाई-बहन थाने पहुंच गए थे। पुलिस ने पैरेंट्स के खिलाफ चालान पेश कर दिया। माता-पिता ने हाईकोर्ट में चुनौती दी। फिलहाल, हाईकोर्ट ने सुनवाई के बाद जिला कोर्ट में माता-पिता के खिलाफ शुरू किए गए ट्रायल पर अंतरिम रोक लगा दी है। इस मामले में बच्चे और माता-पिता दोनों एक-दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं।

हम अब माता-पिता के पास जाना नहीं चाहते

बेटी ने बताया- माता-पिता हमें भोजन नहीं देते। मेरी फीस नहीं भरी तो मैं एक साल पिछड़ गई। भाई की पढ़ाई रुकवाने की भी कोशिश की। इस कारण हम बुआ के साथ रहने आ गए। मम्मी-पापा ने बुआ के घर आकर मारपीट की। तोड़फोड़ भी की। हमारा गला दबाया। खुद थाने जाकर झूठी रिपोर्ट लिखाई कि बुआ हमें जबरन उठाकर ले आई है। वे हमें अंधेरे कमरे में बंद कर देते थे। भाई के हाथ-पैर बांध देते थे। उसकी हाफ पेंट गीली हो जाती थी तो मां मारती थी। पापा ने छोटे भाई को एक बार ऐसा धक्का दिया कि उसकी आंख फूटते-फूटते बची। मुझे भी एक बार पेट में इतनी जोर से लात मारी कि अभी भी दर्द होता है। हम अब उनके पास जाना नहीं चाहते।

इंदौर में माता-पिता पर एफआईआर का यह मामला है - माता-पिता आश्चर्यचकित थे कि बच्चे उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज करा सकते हैं। उन्हें लगा था कि पारिवारिक मामला है। दोनों को समझाने की कोशिश भी की थी। घर लाने का भी प्रयास किया। लेकिन दोनों बच्चे किसी भी प्रकार से सहमत नहीं थे। प्रॉपर्टी विवाद का भी पेंच है।

35 लाख रुपए लूटने वालों ने की थी रेकी

पुलिस ने 2 आरोपियों को पकड़ा, बाइक और रुपए बरामद

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के लसूड़िया में कंस्ट्रक्शन कारोबारी के कर्मचारियों से हुई 35 लाख की लूट के मामले में पुलिस टीम ने रेकी करने वाले दो और आरोपियों को पकड़ा है। आरोपी हीरानगर और एमआईजी इलाके के रहने वाले हैं। उनके पास से बाइक और रुपए बरामद हुए हैं। पुलिस अभी आरोपियों से और पूछताछ कर रही है। डीसीपी अभिनव विश्वकर्मा की टीम ने 35 लाख की लूट में रेकी करने वाले विशाल निवासी कबीटखेड़ी और काना निवासी सोमनाथ की चाल को पकड़ा है। आरोपियों से एक पल्सर बाइक और कुछ रुपए मिले हैं। आरोपियों ने पुलिस को बताया कि उन्होंने लकी और केशव के कहने पर रेकी की थी। इसके बाद दोनों कुछ रुपए लेकर फरार हो गए थे। लूट कांड में पुलिस की टीम अभी तक 5 आरोपियों को पकड़ चुकी है। जिसमें कंस्ट्रक्शन कारोबारी रणवीर सिंह का कर्मचारी सोनू बौरासी इसमें शामिल था। उसी के कहने पर आरोपियों ने वारदात की थी। पुलिस अफसरों के मुताबिक बाकी के आरोपी भी जल्द पकड़ में आ जाएंगे। उन्हें लेकर टीमें तलाश कर रही हैं।

शादी से पहले युवती के सुसाइड की कहानी

लिव-इन कपल, मकान मालिक करते थे प्रताड़ित, सुसाइड नोट से सामने आई सच्चाई

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर की एमआईजी पुलिस ने हेल्थ डिपार्टमेंट में कर्मचारी युवती के सुसाइड मामले में उसके मकान मालिक और लिव-इन में रहने वाले युवक-युवती को आरोपी बनाया है। युवती के सुसाइड नोट और उसकी बहन व जीजा के बयानों को आधार बनाकर पुलिस ने कार्रवाई की है। मृतका के परिवार ने लिव-इन में रह रहे युवक-युवती पर गंभीर आरोप लगाए। अभी पूरा मामला जांच में है। मृतका की शादी तय हो गई थी। जुलाई में ही उसकी शादी जबलपुर में होना थी। जिसकी तैयारी भी हो रही थी। एमआईजी थाने के एएसआई संजय देशला ने सोनाली सोलंकी के सुसाइड केस की जांच की। उसकी मौत के मामले में 23 जुलाई को मकान मालिक हेमंत जैन, निवासी अम्बेडकर नगर, उसकी किराएदार वर्षा राजपूत और प्रसन्न जीत शर्मा को परेशान कर आत्महत्या के लिए उकसाने के मामले में आरोपी बनाया। सोनाली हेल्थ डिपार्टमेंट में कार्यरत थी और करीब एक साल से ज्यादा समय से हेमंत जैन के मकान में रह रही थी।

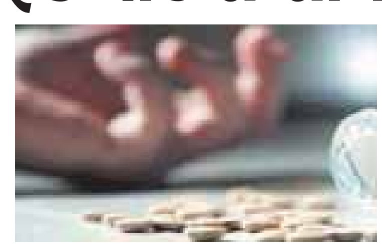

सुसाइड नोट में लिखा था मकान मालिक और युवक-युवती का नाम

सोनाली ने 27 जून को जहर खाकर सुसाइड कर लिया था। बहन सुनयना उसे अरविंदो अस्पताल लेकर पहुंची थी। यहां देर शाम उसकी मौत हो गई थी। इसके बाद परिवार ने हेमंत, वर्षा और प्रसन्न-जीत पर आरोप लगाए। जिसके बाद जांच शुरू हुई। सोनाली ने एक सुसाइड नोट छेड़ा था, जिसमें मकान मालिक हेमंत जैन व रूम नंबर 11 के किराएदार युवक-युवती पर मकान खाली करने के लिए प्रताड़ित करने की बात कही। सोनाली ने लिखा कि इसी कारण से वह अत्यधिक दुखी है और सल्फास खाकर जान दे रही है।

एक माह बाद ही होना थी शादी

हेमंत के बार-बार मकान खाली करने की बात पर उसने कहा भी था कि वह जल्द ही जबलपुर चली जाएगी। सोनाली पहले दूसरे इलाके में रहती थी। लेकिन अम्बडेकर नगर से ऑफिस पास पड़ने के कारण वह यहां रहती थी। पुलिस के मुताबिक सभी आरोपियों पर केस दर्ज कर लिया गया है। अभी मामला जांच में है।

टीचर बोली-छात्राओं के कपड़े नहीं उतरवाए

मोबाइल के संदेह में चेकिंग के आरोपों को झूठा बताया; स्टूडेंट्स ने थाने में की थी शिकायत

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के सरकारी स्कूल में छात्राओं के कपड़े उतरवा कर चेकिंग करने के मामले में जांच चल रही है। जिस टीचर पर आरोप है, उसका कहना है कि छात्राएं झूठ बोल रही हैं। सामान्य चेकिंग की गई थी। किसी को टॉयलेट में ले जाकर कपड़े नहीं उतरवाए। क्लास रूम के बाहर ही चेक किया। इस दौरान तीन और लेडी टीचर भी मौजूद थीं लेकिन सिर्फ मुझे ही टारगेट किया जा रहा है।

टीचर ने कहा, मामले में एकतरफा कार्रवाई हुई है, स्कूल में अनुशासन भी नहीं रखेंगे क्या?

इंदौर के सरकारी हायर सेकेंडरी स्कूल में शुक्रवार को छात्राओं के कपड़े उतार कर चेकिंग करने का मामला सामने आया था। 5 छात्राओं ने शनिवार को परिजन के साथ मल्हारगंज थाने पहुंचकर शिकायत की थी। उन्होंने आरोप लगाया था कि क्लास में एक छात्रा के पास मोबाइल मिला था। रिंग टोन बजी तो इसका पता चला। टीचर मनीषा चौरसिया ने छात्रा की तलाशी ली तो मोबाइल मिल भी गया। इसी बीच दूसरी छात्रा

ने एक और क्लासमेट के पास फोन होने की बात कही। इस पर सीनियर टीचर जया पंवार ने बाथरुम में छात्राओं की चेकिंग की। जबरदस्ती उनके कपड़े उतरवाए। फिलहाल, मामले में पंवार को स्कूल से हटाकर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में अटैच कर दिया गया है।

टीचर बोली- खुद को बचाने झूठा आरोप लगाया

टीचर जया पंवार ने कहा- एक छात्रा के पास मोबाइल मिल गया था। खुद को बचाने के चक्कर में मुझ पर आरोप लगाए गए हैं। मैंने साधारण रूप से छात्राओं की चेकिंग की। निर्वस्त्र कर चेकिंग करने जैसी बात ही नहीं है। अनुशासन व्यवस्था देखने वाले सर दूसरे स्कूल गए थे इसलिए जांच करने उनकी जगह मुझे भेजा गया था। पहले मनीषा मैडम ने छात्राओं की चेकिंग की थी। उन्हें दो रिंगटोन सुनाई दी थी। मनीषा मैडम को एक छात्रा के पास से जो मोबाइल मिला था, वो की-पेड वाला था। छात्रा से मोबाइल के बारे में पूछा। कॉल डिटेल चेक की तो सैंडी नाम दिखाई दिया। उस नंबर पर फोन लगाया तो कॉलर लड़का निकला। उससे बात करने की कोशिश की लेकिन वो कतरा रहा था। छात्रा ने लड़के से कहा भी कि मैडम से बात कर लो। उसी लड़के ने छात्रा को मोबाइल गिफ्ट किया था। इसके बाद क्लास रूम के जिस हिस्से से दूसरे मोबाइल की रिंगटोन सुनाई दी थी, वहां भी हमने चेकिंग की। मैं अकेली नहीं थी, मेरे साथ तीन लेडी टीचर थी लेकिन टारगेट मुझे ही किया गया है।

तीसरी मंजिल के टावर से कूदी महिला, पति से विवाद के बाद दी जान

लोगों ने समझाया लेकिन नहीं मानी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में एक महिला ने तीसरी मंजिल पर बने टावर से कूदकर अपनी जान दे दी। बताया जा रहा है कि पति से किसी बात पर विवाद के बाद महिला ने ये कदम उठाया। इस घटना का वीडियो भी सामने आया है। घटना शहर के लसूड़िया क्षेत्र की शनिवार की है। इसका वीडियो रविवार को सामने आया। पुलिस ने रविवार को पोस्टमॉर्टम कराकर शव परिवार को सौंपा है।

लोगों ने समझाया, लेकिन नहीं मानी- टीआई तारेश सोनी ने बताया- घटना ग्रीन प्री-व्यू ईडब्ल्यूएस क्वार्टर की है। मृतक महिला का नाम अंगूरी बाई (25) है। पुलिस के मुताबिक पति से विवाद के बाद अंगूरी छत पर चली गई और वहां तीसरी मंजिल पर बने टावर पर चढ़कर नीचे छलांग

लगा दी। हादसे के समय लोगों ने उसे समझाने की कोशिश भी की। लेकिन वह नहीं मानी। महिला कुछ देर टावर पर खड़ी रही। लोगों ने उसे समझाने की कोशिश भी की। लेकिन वह नहीं मानी और उसने छलांग लगा दी।

निजी कंपनी में नौकरी करता है पति- पुलिस के मुताबिक घटना के समय महिला का 5 साल का बेटा, 3 साल की बेटी और सास भी घर पर मौजूद थे। अंगूरी बाई का पति निजी कंपनी में नौकरी करता है। पुलिस ने रविवार को परिवार के सदस्यों के बयान भी लिए हैं।

संपादकीय

सागर हादसा : कोई सबक लेंगे?

मप्र के सागर जिले के शाहपुर में एक मकान की दीवार गिरने से 9 बच्चों की असमय मौत और कई बच्चों के घायल होने की घटना हिला देने वाली है। हादसा सुबह नौ बजे के आसपास उस वक्त हुआ, जब लोग वहां शिवलिंग बना रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस दर्दनाक घटना के बाद सख्त कार्रवाई करते हुए जिला कलेक्टर दीपक आर्य, एसपी अभिषेक तिवारी, एम्बन्धित एसडीएम तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में व्याप्त अव्यवस्थाओं के लिए डॉ. हरिओम बंसल को भी निलंबित कर दिया है। दोनों आला अधिकारियों को ताबड़तोड़ मंत्रालय व पुलिस मुख्यालय में अटैच कर दिया गया है। नगरपालिका अधिकारी और उप अभियंता को निलंबित कर दिया तथा नगर निकायों को जर्जर भवनों का पता लगाने और कार्रवाई करने का भी निर्देश दिया है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने भी इस घटना पर दुख जताया। इस बीच मृतको के परिजनों और घायलों को प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री सहायता कोष से क्रमशः 2 लाख व 59 हजार तथा सीएम सहायता कोष से 4-4 लाख रू. की मदद की घोषणा की गई है। अब तक मिली जानकारी के मुताबिक हादसा तब हुआ, जब बच्चे पचास साल पुराने भवन में मिट्टी के शिवलिंग बना रहे थे। साथ ही रविवार छुट्टी होने से कई बच्चे वहां खेल रहे थे। दुर्घटना स्थल के पास स्थित हरदौल मंदिर में भागवत कथा का आयोजन चल रहा था। सावन के महीने में शिवलिंग निर्माण के दौरान दीवार सीधे उन बच्चों के ऊपर गिरी जो शिवलिंग बना रहे थे। दीवार गिरते ही चीख पुकार मच गई। तत्काल ही दीवार के मलबे को हटाने का नगर परिषद, पुलिस और नगर वासी राहत कार्य में जुट गए। बताया जाता है कि सागर में भारी बारिश के चलते यह दीवार पूरी तरह जर्जर हो गई थी। इस हादसे में सरकारी अस्पताल की लापरवाही भी सामने आई है। लोगों ने हादसे के तुरंत बाद घायलों को सरकारी अस्पताल पहुंचाया, लेकिन वहां डॉक्टर व अन्य स्टाफ नदारद था। केवल एक व्यक्ति मौजूद था। इस पर पीड़ितों के परिजनों ने काफी हंगामा घायल हैं। सूचना मिलने पर रहली विधायक और पूर्व मंत्री गोपाल भार्गव मौके पर पहुंचे। जान गंवाने वाले कई बच्चे अपने माता-पिता की इकलौती संतान थे। र्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस नेता कमलनाथ ने कहा कि दीवार गिरने से बच्चों की मौत की यह दूसरी घटना है। कुछ ही दिन पहले रीवा में एक स्कूल की दीवार गिरने से 4 बच्चों की मौत हो गई थी। लेकिन उससे भी कोई सबक नहीं लिया गया। बुंदेलखंड में सावन मास में पार्थिव शिवलिंग की पुरानी परंपरा है। इसमें काफी लोग भाग लेते हैं। बावूजद इसके लगता है कि प्रशासन ने कोई सावधानी नहीं बरती। जर्जर दीवार वाले भवन में शिवलिंग निर्माण की अनुमति कैसे दी गई, खासकर तब कि क्षेत्र में लगातार बारिश हो रही है। दूसरे, किसी भी संभावित हादसे से निपटने के लिए प्रशासन ने कोई भी पूर्व तैयारी नहीं की थी। शाहपुर के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में भी घोर अव्यवस्था का आलम था। अगर वहां तत्काल डॉक्टर व अन्य मेडिकल स्टाफ होता और तुरंत इलाज शुरू कर दिया जाता तो शायद कुछ बच्चों की जानें बच सकती थीं। इस घटना की जांच रिपोर्ट में सारी बातें सामने आएंगी। लेकिन यहां असल मुद्दा यह है कि अमूमन बारिश में होने वाले ऐसे हादसों से कोई सबक क्यों नहीं लिया जाता? नगर पंचायत तो बारिश के पहले ही जर्जर भवनों का सर्वे कर रिपोर्ट तैयार कर लेनी चाहिए थी। अगर उस जीर्णशीर्ण भवन में शिवलिंग निर्माण की इजाजत नहीं दी होती तो भी इस हादसे को टाला जा सकता था।

नजरिया

तनवीर जाफ़री

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

हम तो डूबे हैं सनम तुमको भी ले डूबेंगे

मानसून की आमद हो चुकी है। इस मौसम में देश के किसी न किसी भाग से बाढ़, जलप्रलय,भूस्खलन,बादल फटने जैसी प्राकृतिक आपदाओं की ख़बरें आती रहती हैं। इस बार भी जहाँ हिमाचल प्रदेश व उत्तरांचल से बादल फटने व भूस्खलन की कई ख़बरें भयावह तस्वीरों के साथ आ चुकीं वहीँ केरल के वायनाड ज़िले के मुंडक्कई, चूरलमाला और मलप्पुरम ज़िले के नीलांबुर वन क्षेत्र में हुए सबसे ख़तरनाक व डरावने भूस्खलन ने तो पूरे देश को शोकमग्न कर दिया। ख़बरों के अनुसार इस भूस्खलन में अब तक 400 से अधिक लोगों की मौत व सैकड़ों लोगों के लापता होने का समाचार हैं। सैकड़ों मकान ज़मींदोज़ हो चुके हैं। हिमाचल व उत्तरांचल से आने वाली वह तस्वीरें जिनमें अनेक मकान व गाड़ियां जलसमाधि लेते दिखाई देते हैं वास्तव में प्रकृति की अथाह शक्ति का दर्शन कराती हैं। बेशक ऐसी त्रासदियों को प्राकृतिक आपदा का नाम दिया जा सकता है। क्योंकि प्रकृति का यह प्रहार कब कहाँ,किस रूप में और किस तीव्रता के साथ हो आधुनिक विज्ञान प्रौद्योगिकी के बावजूद किसी को इस बात का सही अंदाज़ा नहीं हो पाता।

परन्तु रिहायशी इलाक़ों में पानी भर जाना,भूमिगत मार्गों का तालाब में बदल जाना,नाली नालों का जाम होना आदि को तो प्राकृतिक आपदा का नाम हरगिज़ नहीं दिया जा सकता? नया संसद भवन यानी सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट जोकि 13,450 करोड़ की लागत से लगभग 4 वर्षों में बनकर तैयार हुआ था और गत वर्ष 19 सितंबर 2023 से इस नई संसद भवन में पहली कार्यवाही शुरू की गई थी। इसी संसद भवन की एक गुंबद से बारिश में पानी टपकने लगा और जलभराव हो गया। संसद भवन में पानी टपकने की जगह पर बाल्टी रखी गयी थी जिससे पानी बाल्टी में गिर रहा था। कई सांसद भी बारिश में भीगते हुये बाहर निकल रहे थे। यानी नए संसद भवन में कोई पोर्टिको भी नहीं है और संभवत वहां जल निकासी की भी कोई व्यवस्था नहीं है। अब संसद भवन के टपकने में प्रकृति का क्या दोष ? इस घटना के बाद आरोप लग रहा है कि यहाँ न तो छत वाटर प्रूफ़ है न ही पानी निकासी के समुचित प्रबंध हैं न सीवर ड्रेनेज सिस्टम सही है। जबकि अंग्रेज़ों द्वारा निर्मित पुराना संसद भवन जोकि 97 साल पहले 1927 में बनाया गया था आख़िर उसके टपकने या लीक होने की तो आज तक कोई ख़बर नहीं आयी? परन्तु मात्र एक वर्ष पहले तैयार हुआ संसद भवन टपकने भी लगा? इस घटना में प्रकृति दोषी है या भ्रष्ट प्रबंधन या अकुशल,अदूरदर्शी निर्माणकर्ता व इंजीनियर्स ?

इसी तरह मानसून से पहले ही जून माह के अंत में जब पहली बारिश हुई उस समय अयोध्या में राम मंदिर मंदिर की छत टपकने लगी। राम मंदिर के मुख्य पुजारी सत्येंद्र मिश्र ने उसी समय मामले की

गंभीरता का ज़िक्र करते हुये कहा था कि, 'गर्भगृह में, जहां रामलला विराजमान हैं, वहां भी पानी भर चुका है। ऐसे में कहीं बिजली का करंट न उतर आए इसलिए सुबह 4 बजे और 6 बजे होने वाली आरती टॉर्च की रोशनी में करनी पड़ी। उसी समय पुजारी ने यह भी कहा था कि अगर एक-दो दिन में इंतज़ाम नहीं हुआ, तो दर्शन और पूजन की व्यवस्था बंद करनी पड़ेगी।' अभी तक राम मंदिर का जो केवल एक फ्लोर तैयार हुआ है इसी पर लगभग 1800 करोड़ रुपए ख़र्च हो चुके हैं। परन्तु मंदिर ट्रस्ट के कई ज़िम्मेदार लोगों द्वारा पुजारी सत्येंद्र मिश्र के आरोपों को झुठलाने की कोशिश की गयी। ज़रा सोचिये यह घटना प्राकृतिक आपदा का परिणाम है या भ्रष्टाचारी व अकुशल निर्माण व्यवस्था का? पिछले दिनों अयोध्या में ही दस से अधिक जगहों पर सड़कों के धंसने के भी सचित्र समाचार आये थे।

ऐसी ही शुरुआती बारिश में पिछले महीने इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट के टर्मिनल-1 पर पार्किंग की छत गिर गई थी। इस हादसे में कार में बैठे एक कैब ड्राइवर की मौत हो गई थी और 10 अन्य घायल हो गये थे। उसी दौरान देश के अनेक हवाई अड्डों की छतों के टपकने व पानी से एयरपोर्ट के लबालब भर जाने के समाचार आये थे। पिछले दिनों भी मध्यप्रदेश के सतना में 30 करोड़ की लागत से बने एयरपोर्ट में बारिश का पानी भर गया। एयरपोर्ट की एयर स्ट्रिप में भी पानी भर गया। जिससे एयरपोर्ट क्षेत्र में विकास कार्यों की गुणवत्ता व इसकी डिज़ाइन पर सवाल उठने लगे हैं कि आख़िर मात्र डेढ़ इंच बारिश ने सतना में 30 करोड़ रुपये की लागत से बन रहे इस नवनिर्मित एयरपोर्ट को जल-भराव के कारण अपनी चपेट में कैसे ले लिया? इसी तरह जयपुर में भी पिछले दिनों हुई बारिश ने तो पूरी गुलाबी नगरी को ही डुबो कर रख दिया। स्मार्ट सिटी कहे जाने वाले जयपुर में एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन, अस्पताल, कार्यालय, स्कूल, बाज़ार, मुहल्ले कॉलोनी पुलिस थाने आदि सभी जलमग्न हो गये। जगह-जगह सड़कें धंस गईं, जिनमें स्कूल बस, रिक्शा, कारें और बुलडोज़र तक समा गए। इसी तरह बंगाल के बर्धमान ज़िले के दुर्गापुर में हुई लगातार बारिश के कारण हवाई अड्डे के परिसर में और उसके आसपास जलभराव हो गया है। जिससे क़ाज़ी नज़रूल इस्लाम हवाई अड्डे से आने-जाने वाली उड़ानें प्रभावित हुई हैं। एक अधिकारी ने कहा कि नई दिल्ली और बेंगलुरु सहित हवाई अड्डे से आने-जाने वाली लगभग तीन उड़ानों को रद्द करना पड़ा। इसी प्रकार बेंगलुरु एयरपोर्ट पर भी भारी जलजमाव की ख़बरें हैं।

पिछले दिनों यूपी की राजधानी लखनऊ में भी तेज़ बारिश के चलते विधानसभा सचिवालय भवन में पानी घुस गया। जब सदन में पानी घुसा तो उस समय वहां सीएम योगी आदित्यनाथ भी मौजूद थे। उन्हें सदन से बाहर निकलने के लिए दूसरे गेट का इस्तेमाल करना पड़ा। लगभग पूरे विधानसभा भवन के अंदर बारिश का पानी घुस गया । सदन के ग्राउंड फ़्लोर के सभी कमरे जलमग्न हो गए। सिपाहियों व कई अन्य कर्मचारियों ने जलभराव के चलते दीवार और गेट पर चढ़ कर अपनी जान बचाई। इतना ही नहीं बल्कि मुख्यमंत्री आवास के बाहर पार्क रोड पर भी ज़बरदस्त जल भराव हो गया। सिविल अस्पताल रोड पर हुए जलभराव में तो कई वाहन बंद हो गए। हज़रतगंज के कई इलाक़ों में तो बाढ़ जैसे हालात नज़र आये। यहां नगर निगम समेत कई अन्य सरकारी कार्यालयों में भी बारिश का पानी घुस गया। पिछले दिनों दिल्ली के राजेंद्र नगर में यू पी एस सी की कोचिंग लेने आये कई बच्चे बेसमेंट में डूबने से मर गये।

निश्चित रूप से बारिश प्रकृति का एक ऐसा उपहार है जो अत्यधिक होने पर हमें परेशानी में तो ज़रूर डाल देता है। परन्तु हम जिस विकसित भारत के निर्माण की माला जपते रहते हैं, विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में छलांग लगाने की बातें करते रहते हैं उसमें इस तरह की ग़ैर ज़िम्मेदाराना भ्रष्ट व अकुशल व्यवस्था की कोई गुंजाईश नहीं है। देश को लूटने व बेच खाने वाला निकृष्ट नेतृत्व जो छतों का टपकना नहीं रोक सकता,बरसाती पानी की निकासी सुनिश्चित नहीं कर सकता,नालों व नालियों की समय रहते सफ़ाई नहीं करवा सकता, ऐसी संसद,विधान सभा और एयरपोर्ट तक को डूबने से न बचा पाने वाली 'डूबती' सरकार व शासन व्यवस्था के लिये तो यही कहा जा सकता है कि - हम तो डूबे हैं सनम तुमको भी ले डूबेंगे।

मुद्दा

प्रो. मनोज कुमार

लेखक स्तंभकार हैं।

बुनकरों की थाली से निवाला छीनती मशीनें

भारत गांवों का देश कहलाता है और गांवों की धड़कन लघु और कुटीर उद्योगों से चलती है. महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज की परिकल्पना में गांवों को आर्थिक रूप से सम्पन्न बनाने के लिए हाथकरघा को बढ़ाने पर विशेष रूप से जोर दिया गया है. मिसाल के तौर पर गांधीजी स्वयं के हाथों से बुने कपड़ों का उपयोग करते थे. विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार करने और स्वदेशी वस्तुओं को बढ़ावा देने के लिए आंदोलन की शुरुआत 7 अगस्त 1905 से हुई थी. इसी आंदोलन के चलते तत्कालीन भारत के लगभग हर घर में खादी बनाने की शुरूआत हुई थी.

स्वदेशी उद्योग और विशेष रूप से हथकरघा बुनकरों को प्रोत्साहित करने के लिए, और 7 अगस्त 1905 को चलाए गए स्वदेशी आंदोलन को सम्मान देते हुए सरकार ने हर साल 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के रूप में मनाने का निर्णय किया था. प्रधानमंत्री ने 2015 में हथकरघा दिवस की शुरुआत करते हुए कहा था कि सभी परिवार घर में कम से कम एक खादी और एक हथकरघा का उत्पाद जरूर रखें. 7 अगस्त 2015 को चेन्नई में मद्रास विश्वविद्यालय की शताब्दी के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रथम राष्ट्रीय हथकरघा दिवस का उदघाटन किया था, जिसके बाद से यह प्रतिवर्ष मनाया जा रहा है. हथकरघा गरीबी से लडऩे में एक अस्त्र साबित हो सकता है, जैसे स्वतंत्रता के संघर्ष में स्वदेशी आंदोलन था. प्रत्येक वर्ष 7 अगस्त को राष्ट्रीय हाथकरघा दिवस मनाने का संकल्प प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लिया था जिसका यह दसवां पड़ाव है.

चंदेरी के बुनकर हों या कोसे के कपड़ों को उत्पादन करने वाले कारीगर नई तकनीक के सामने हाथ डालते नजर आ रहे हैं. जिन बुनकर परिवारों को हथकरघा व्यवसाय से इश्क है, वे ही इसे स्वयं को खपा रहे हैं लेकिन युवा वर्ग शहरों की ओर पलायन कर अन्य व्यवसाय में अपना भविष्य देख रहे हैं. अक्सर चंदेरी आकर सेलिब्रेटी बुनकरों के साथ फोटो खिंचा जाते हैं और ज्यादा हुआ तो एकाध हिन्दी फिल्म सुई धागा जैसे बन जाती है. लेकिन इससे बुनकरों का कोई लाभ नहीं होता है. सरकार उनकी बेहतरी का ढिढ़ोरा पीटती है लेकिन जमीनी तौर पर बुनकरों की थाली फांके पर ही गुजरती है. गांधी का सपना, अबसपना ही बनकर रह गया है और केन्द्र सरकार का हेंडलूम दिवस एक उत्सवी परम्परा.

उल्लेखनीय है कि प्राचीन काल से ही भारत में हथकरघा उद्योग का विशेष महत्व रहा है. आज भी हैंडलूम यानी हथकरघा के जरिए लाखों लोगों को रोजगार मिला हुआ है. खासकर ग्रामीण क्षेत्र के लिए

यह जीवनयापन का एक महत्वपूर्ण जरिया है. सबसे खास बात ये है कि हैंडलूम व्यापार भारत के पर्यावरण के भी अनुकूल है. भारत में आर्थिक गतिविधियों के सबसे बड़े असंगठित क्षेत्रों में से एक है जो ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों के लाखों बुनकरों को रोजगार प्रदान करता है. इनमें से अधिकांश महिलाएं और आर्थिक रूप से वंचित समूहों के लोग हैं. देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में हथकरघे का योगदान और बुनकरों की आमदनी में वृद्धि करने के उद्देश्य से साल में एक दिन राष्ट्रीय हथकरघा दिवस मनाया जाता है. जमीनी हकीकत में इसका कोई लाभ बुनकरों को नहीं मिलता है.

हैंडलूम का हिंदी अर्थ है 'हथकरघा' जो दो शब्द हैंड (हाथ) और लूम (करघा) से मिलकर बना है. 'करघा' धागा या धागा बुनकर कपड़ा बनाने के लिए एक उपकरण होता है जिसे हाथ से संचालित होकर चलने वाला यह उपकरण 'हथकरघा' (हैंडलूम) कहलाता है. यह एक पुरानी तकनीक है जिसका उपयोग बुनकर कपड़े बनाने के लिए करते हैं. करघा आमतौर पर खंभे, लकड़ी के लॉग और रस्सियों से बना होता है. हथकरघा का उपयोग विभिन्न उत्पादों जैसे साड़ी, कालीन/गलीचे, शॉल आदि को बुनने के लिए किया जा सकता है. हथकरघा के अलग-अलग प्रकार हैं जैसे पिट करघा, फ्रेम करघा, खड़े करघा हथकरघा उद्योग से निर्मित सामानों का विदेशों में भी खूब निर्यात किया जाता है. लेकिन खूबसूरत बुनाई और कढ़ाई करने वाले कारीगरों की जगह अब मशीनों ने ले ली है. मशीनों ने बुनकरों की थाली से निवाला छीन लिया है.

उल्लेखनीय है कि हथकरघा क्षेत्र महिला सशक्तिकरण की कुंजी है. 70 प्रतिशत से अधिक हथकरघा बुनकर और संबंधित श्रमिक महिलाएं हैं. भारत में कृषि के बाद हथकरघा सबसे बड़े रोजगार प्रदाताओं में से एक है. देश में यह क्षेत्र लगभग 23.77 लाख हथकरघा से जुड़े 43.31 लाख व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करता है. इन संख्याओं में से 10 प्रतिशत अनुसूचित जाति (एससी) से हैं, 18 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति (एसटी) से हैं, और 45प्रतिशत अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) से हैं. भारत में, हथकरघा क्षेत्र कपड़ा उत्पादन में लगभग 15 प्रतिशत योगदान देता है और देश की निर्यात आय में भी योगदान देता है.

केंद्रीय अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय ने उस्ताद योजना के तहत बुनकरों के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था कराई जिससे उन्हें तकनीकी रूप से और समृद्ध किया जा सके. सरकार भी बुनकरों को फैशन जगत से जोडऩे की बात दोहराती आयी है और बुनकरों को सीधे बाजार से उपलब्ध कराने की बात कहती आयी है. हथकरघा क्षेत्र के पुनरोत्थान के लिए कदम उठाए जा रहे है. 2017 में सरकार ने बड़ा फैसला करते हुए कहा था कि देश में जगह जगह स्थापित बुनकर सेवा केंद्रों (डब्ल्यूएससी) पर बुनकरों को आधार व पैन कार्ड जैसी अनेक सरकारी सेवाओं की पेशकश की जाएगी. ये केंद्र बुनकरों के लिए तकनीकी मदद उपलब्ध करवाने के साथ-साथ एकल खिडक़ी सेवा केंद्र बने हैं. और इन खिडक़ी से कभी बुनकरों के घर रोशन होने की कोई खबर नहीं आती है. हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने मन की बात कार्यक्रम में कहा कि देश 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस मनाएगा और लोगों का एक छोटा सा प्रयास कई लोगों के जीवन को बदल देगा, उन्होंने लोगों से हैशटैग 'माई प्रोडक्ट माई प्राइड' के साथ सोशल मीडिया पर स्थानीय उत्पादों को अपलोड करने और खादी और हथकरघा के कपड़े खरीदना शुरू करने का आग्रह किया.

सरकारों का काम होता है लोकलुभावन योजना और दिवस मनाया जाना. वास्तव में ये दिवस केवल कागजी और उत्सवी होते हैं जिसका बुनकरों की जिंदगी से कोई सरोकार नहीं होता है. परसाई जी के व्यंग्य की पंक्ति याद आती है जिसमें उन्होंने कहा था कि दिवस तो कमजोरों का मनाया जाता है. कभी थानेदार दिवस मनाते आपने देखा है. तो जनकवि की यह पंक्ति भी सामयिक है कि 'तुम्हारी फाइलों में गाँव का मौसम गुलाबी है, मगर ये आंकड़े झूठे हैं ये दावा किताबी है'।

क्यों रहता है हमें हादसों का इंतजार

दृष्टिकोण

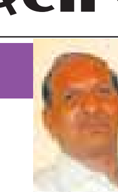

अनिल ठाकुर

लेखक स्तंभकार हैं।

आए दिन हमे हादसों की खबरे सुनने , पढ़ने को मिलती है । इनमे से कुछ प्राकृतिक एवम अधिकांश मानवीय भूलो या नियमों की अनदेखी के कारण होती है । किसी भी दुर्घटना के बाद प्रशासन जागता है , जो लोगो की जानमाल की रक्षा से अधिक अपनी गलतियों से बचाव की मुद्रा एवम निम्न स्तरीय कर्मचारियों पर दोषारोपण कर उन्हे बलि का बकरा बनाने में अधिक सक्रिय नजर आता है । नेताओं को फोटो सेशन का एक सुनहरा मौका मिलता है , चौबीस घंटे चलने वाले मीडिया चैनलो को अगले हादसे के इंतजार तक बेमतलब बहस का। हादसों की गंभीरता के अनुसार प्रशासकीय , न्यायिक जांच की मांग एवम निर्णय लिए जाते है । लेकिन जांच के निष्कर्षों के आने तक दूसरा हादसा हो जाता है , फिर नया चक्रव्यूह घड़ा जाता है और अंत में वही ढाक के तीन पात ।

प्राकृतिक हादसों की बात करे तो बाढ़, भू स्खलन, भूकंप आदि ऐसे है जहां थोड़ी असहाय जैसी स्थिति होती है , लेकिन अब विज्ञान ने इतनी प्रगति कर ली है, जिसके आधार पर पूर्व में संकेत मिल जाते है । यदि प्रशासन उन्हे गंभीरता से ले तो बढ़ी संख्या में जान माल की रक्षा की जा सकती है । बड़े शहरों में बनाए जा रही मल्टीस्टोरी बिल्डिंगों में भूकंप निरोधी, आगजनी से बचाव के कितने नियमो का पालन और उसके आधार पर एनओसी, ऑक्यूपेंसी सर्टिफिकेट दिए जा रहे है ? उद्योगों में आगजनी एवम अचानक विस्फोट के बाद अग्नि शमन वाहन और घायलों को बाहर निकालने के लिए निर्गम मार्ग आदि के नियमों का कितना पालन किया जा रहा है , इसकी जवाबदारी जितनी उद्योग के अधिकारियों की होती है , उससे ज्यादा सरकारी अधिकारियों एवम निरीक्षकों की होती है , जिन्हे वर्ष में दो तीन बार उद्योगों का निरीक्षण कर इस तरह के अनाधिकृत निर्माणों को हटाने और आवश्यक उपकरणों की उपलब्धता को सर्टिफाइड करना जरूरी होता है । कई क्षेत्रों में प्रति वर्ष बाढ़ आती है , प्रशासन वहां ऐतिहातन क्या कदम उठाता है , क्या आंकड़े इनकी प्रामाणिकता सिद्ध करते है । देहली हादसे के बाद उत्तरप्रदेश विधानसभा के निचले तल में पानी भर गए था, वहां कंप्यूटर पर कई कर्मचारी काम कर रहे थे। यदि शॉर्ट सर्किट या अन्य किसी अन्य कारण से करंट फेल जाता तो कितनी जन हानि हो सकती थी, कौन जिम्मेदार होता ? ऐसी स्थिति बनी ही क्यों, निर्माण कार्य में अनदेखी हुई या बाद में हुए अतिक्रमण पानी निकासी में बाधक बने, इसका जवाब मिलना मुश्किल है ।

करीब चार वर्ष पूर्व आई कोरोना जैसी भयानक आपदा के साइड इफेक्ट आज भी हमारी जिंदगी असर कर रहे है । उस दौरान हमारी स्वास्थ्य सेवाओं की जिस तरह से धज्जियां उड़ी थी उसे दोहराने की जरूरत नही है। उससे हमने क्या सबक लिया, स्वास्थ्य सेवाओं में कोई परिवर्तन दिखाई दिया, शायद नहीं। ऑक्सीजन, वेंटीलैटरो की कमी से पूरे देश में हाहाकार मच गया था। सरकार ने करोड़ों रुपए नए ऑक्सीजन प्लांट, वेंटिलेटर, चिकित्सा उपकरणों नए गद्दों एवम पलंग खरीदी के लिए राज्यों को दिए । इन ऑक्सीजन प्लांट में से कितने स्थापित हो चुके है , कितनी क्षमता से काम कर रहे है , कितनी ऑक्सीजन पैदा कर मरीजों के उपयोग में आ रही है , इसकी कोई पुख्ता जानकारी राज्य स्वास्थ्य के पास है, वेंटिलेटर एवम अन्य चिकत्सा उपकरणों में से कितने उपयोग में आ रहे है या चिकित्सालय के कबाड़ खाने में अनुपयोगी हो धूल खा रहे है ? शायद ही किसी राज्य के स्वास्थय विभाग के पास इसकी प्रमाणिक जानकारी उपलब्ध होंगी । पलंग और गद्दे तो कर्मचारियों के घरों या निजी अस्पतालों की शोभा बढ़ा रहे होंगे ।

यह तो हमारी आपद्कालीन व्यवस्थाओं की छोटी सी बानगी भर है । पूरे कुएं में भांग पड़ी है, सब मुंह ढंक कर सोए है, किसी बड़ी नई आपदा के इंतजार में ।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

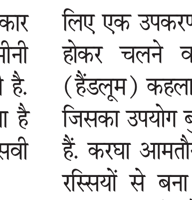

सुरेश रायकवार

नेता बिरादरी

एक अपुष्ट जानकारी के अनुसार, कहा जाता है कि हमारे देश में लगभग 2500-3000 जातियाँ है और इन्ही जातियों की 25000 उपजातियाँ हैं। प्राचीन भारत में जातियों को उनके कार्य या कर्म के आधार पर चार वर्णो में बिना भेदभाव, ऊंच-नीच के विभाजित किया गया था यथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। कालांतर में कर्म के स्थान पर जन्म से जाति का निर्धारण होने लगा जो आज तक चल रहा है।

किन्तु नेता अपने आप में ही एक जाति या बिरादरी होती है,जहां ये लोग अपने जन्मांतर्गत जाति से ऊपर उठ जाते है, खासकर प्रजातांत्रिक व्यवस्था में। नेता-जाति या बिरादरी ही एक ऐसी जाति है जहां गीता में वर्णित सिद्धांत को अपनाकर,कर्म के अनुसार वर्ण निर्धारित होता है अन्यथा अन्य व्यक्ति तो जनमते ही आजीवन उस जाति का हो जाता है जिसमे वह पैदा हुआ है।

पृथ्वी पर जैसे-जैसे जनसंख्या वृद्धि के साथ सभ्यता विकसित हुई वैसे-वैसे ही इस नेता-जाति का भी अभ्युदय और विकास हुआ। आरंभिक काल में हम इन्हे कबीला प्रमुख के रूप में जानते थे जिनके नेतृत्व में आखेट आदि हुआ करते थे बाद में यही लोग राजा कहलाए और अपनी प्रजा की भलाई के नाम पर आपस में युद्ध आदि करवाने लगे। धीरे-धीरे राजकीय व्यवस्था भी काल का ग्रास बन गई और वर्तमान प्रजातांत्रिक व्यवस्था में इस जाति के लोगों को नेता के रूप में जाना जाने लगा है।

किसी भी देश की जातियों की अपनी कार्य संस्कृति और विशेषताएँ होती है जिनके आधार पर ये जानी जाती है, उसी प्रकार नेता-जाति की भी अपनी कुछ विशेषताएँ है। तो आइये जानते है इस महान नेता-जाति की विशेषताओं के संबंध में -

नेता बिरादरी के लोग शिक्षा को बहुत महत्व नहीं देते है, केवल कार्य साधक शिक्षा ही पर्याप्त मानी जाती है. किन्तु अराजकता फैलाने, झूठ प्रचारित करने, दंगे भड़काने, सड़क पर प्रदर्शन और चक्का-जाम, धरना प्रदर्शन आदि के प्रशिक्षण के लिए इनके गुप्त प्रशिक्षण केन्द्रों पर ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य होता है।

नेता-बिरादरी के लोग हर समय सत्ता के सपने देखते रहते है और ऐन-केन-प्रकारेण सत्ता हासिल करना चाहते है,उसके लिए चाहे इन्हे अपने धुरविरोधियों से भी गठबंधन करना पड़े तो ये तैयार रहते है। इस प्रजाति के लोग कबीरजी के उपदेश 'ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर' का शब्दशः पालन करते है इसीलिए इनका ना कोई स्थायी मित्र होता है ना ही स्थायी दुश्मन। अपना फायदा देखते हुए समय और परिस्थिति अनुरूप ये दुश्मन या दोस्त बन जाया करते है।

रिश्वत लेते और देते समय ये किसी की जात नहीं पूछते हैं और रिश्वत का लेना-देना इस जाति में बुरा भी नहीं माना जाता है बल्कि इसके लिए तो नए-नए तरीकों की खोज की जाती है। इस प्रजाति के लोग बहुतायत में रिश्वत लेन-देन के विशेषज्ञ होते हैं।

समस्या पैदा करना इनका धर्म होता है,और समस्या को जीवित रखना व्यवसाय। समस्या के नाम पर ही ये लोग चुनाव में वोट रूपी नोट कमाते हैं। देश में समस्या ना हो तो इस प्रजाति का अस्तित्व शेर, चीता आदि जानवरों की तरह खतरे में आ जाएगा।

सपने दिखाना या झूठे वादे करना इस जाति के लोगों का जन्मजात गुण होता है। जैसे पुलिस वालों को अपशब्द बोलने की आदत होती है वैसे ही नेता-जाति के लोगों को झूठ बोलने की होती है। इनका हौंसला इतना होता है कि ये आमसभा से लेकर संसद तक और पुलिस थाने से लेकर न्यायालय तक कहीं भी झूठ बोल सकते है।

जैसे हर धर्म और जाति के अपने तीर्थ स्थान होते है वैसे ही नेता-बिरादरी के भी तीर्थ स्थल होते है। राज्यों की राजधानियाँ और देश की राजधानी इस जाति के बड़े तीर्थ कहलाते है। प्रत्येक पाँच वर्ष में आम चुनाव के समय इन तीरथों में कुम्भ के मेले जैसा आयोजन होता है।

इनके खून में या कहें डीएनए में ही राजनीति होती है। ये लोग भगवान के मंदिरों के स्थान पर अपने आराध्य दिवंगत नेताओं के आदमक़द बुत बनवाकर सड़कों के बीच में खड़े करवाते है। और उनकी जन्म-मरण तिथि पर मूर्तियों पर हार फूल चढ़ाते है।

चूंकि ये अपनी जन्म-जाति को छोडकर नेता-बिरादरी को अपना लेते है इसलिए इनकी जन्म-जाति पूछे जाने को ये लोग अपना अपमान समझते है। यह जाति अपने आरंभिक काल में बहुत सम्मानित जाति हुआ करती थी क्योंकि तब इस प्रजाति के लोग समाज की निःस्वार्थ सेवा किया करते थे किन्तु जैसे-जैसे इनकी जनसंख्या में वृद्धि हुई वैसे वैसे ही इन लोगों ने सेवा छोडकर राजनीति को अपनी गुंडागर्दी, ब्लेकमेलिंग, भ्रष्टाचार का व्यवसाय बना लिया। और यही कारण रहा कि ये जनसाधारण में अपनी विश्वसनीयता और सम्मान खोते चले गए। हालात ये है कि आज यदि किसी सामान्य व्यक्ति को 'नेता' कह दो तो वह बुरा मान जाता है, जैसे उसे किसी ने गाली दे दी हो।

विचार

सुसंस्कृति परिहार
लेखिका स्तंभकार हैं।

प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करना जरूरी

प्रकृति की अपनी जलप्रवाह प्रणाली है उसमें जब हस्तक्षेप होता है तो इस तरह की घटनाएं होंगी ही। दूसरी बात यह है प्रकृति ने हर क्षेत्र के लोगों को अपने मकान बनाने का सामना मुहैय्या कराया है। पहाड़ी क्षेत्रों में हल्की विलो और देवदार जैसी लकड़ियां बहुतायत से मिलती हैं जिससे पहले वहां मकान बनाने में इनका ही इस्तेमाल होता था, कांक्रीट और सीमेंट की अट्टालिकाएं नहीं बनती थी इसलिए प्राकृतिक आपदा के समय नाममात्र की धन-जन की हानि होती थी। आज़ वायनाड की त्रासदी ऐसी ही त्रासदी है। पहाड़ी क्षेत्र पर बसे गांव जिस तरह बहे उसकी वजह प्रकृति में उपलब्ध भवन सामग्री का इस्तेमाल ना किया जाना भी है। ऊंचाई वाले क्षेत्रों से गिर कर आए वजनी मकानों ने कतार दर कतार नीचे तक सब साफ़ कर दिया।

इन दिनों सावनी वर्षा से देश में चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है जबकि पुराने वक्त में इससे ज्यादा वर्षा दर्ज़ होती रही है लेकिन इस तरह कभी शहर नदी नहीं बने नाही कभी पहाड़ सैलाब बने। जबकि मंद गति से प्रकृति अपना कार्य करती रही। वस्तुतः सच्चाई यह है कि हमने प्रकृति का जिस तरह दोहन किया है वह अक्षम्य है। इसलिए सावन भादों की वर्षा हमें कहर नज़र आ रही है।यह तो वरदान है तमाम कायनात के लिए,जल है तो जंगल है। पानी है तो किसानी है। जल है तो जीवन है।आज़ इस जल को कोसा जा रहा है क्योंकि उसका रौद्र रूप पहाड़ों से लेकर मैदानों तक हमें सता रहा है हमारे धन जन और जीवन छीन रहा है।

इस मसले पर हमें गहराई से सोचना होगा। तथाकथित विकास की दौड़ ने हमें अंधा कर दिया है।सघन आबादी पहाड़ों से लेकर मैदानों पर एक महत्वपूर्ण तथ्य है जिसके कारण सघन कई मंजिला इमारतों की बस्तियां बसाई गई।इस अंधाधुंध निर्माण ने जलप्रवाह प्रणाली को सर्वाधिक नुकसान पहुंचाया है इसलिए पहाड़ दरक रहे हैं और जल निकासी के वे नवीन रास्ते जब बनाते हैं तो तबाही आनी स्वाभाविक है।

प्रकृति की अपनी जलप्रवाह प्रणाली है उसमें जब हस्तक्षेप होता है तो इस तरह की घटनाएं होंगी ही।

दूसरी बात यह है प्रकृति ने हर क्षेत्र के लोगों को अपने मकान बनाने का सामना मुहैय्या कराया है। पहाड़ी क्षेत्रों में हल्की विलो और देवदार जैसी लकड़ियां बहुतायत से मिलती हैं जिससे पहले वहां मकान बनाने में इनका ही इस्तेमाल होता था, कांक्रीट और सीमेंट की अट्टालिकाएं नहीं बनती थी इसलिए प्राकृतिक आपदा के समय नाममात्र की धन-जन की हानि होती थी।आज़ वायनाड की त्रासदी ऐसी ही त्रासदी है। पहाड़ी क्षेत्र पर बसे गांव जिस तरह बहे उसकी वजह प्रकृति में उपलब्ध भवन सामग्री का इस्तेमाल ना किया जाना भी है। ऊंचाई वाले क्षेत्रों से गिर कर आए वजनी मकानों ने कतार दर कतार नीचे तक सब साफ़ कर दिया।

मैदानी क्षेत्रों में भी सैलाब जब आता है तो वह मिट्टी या घासफूस से बने मकानों से ज्यादा पक्के बने मकानों के ज़रिए धन जन की बहुत हानि करता है। इसलिए मैदानी क्षेत्रों में लोग पहले इसी तरह के घरों में रहते थे वे नष्ट होते थे तो उन्हें आसानी से बना लेते थे सरकारी मदद का वे इंतजार नहीं करते थे।

समुद्र तटीय क्षेत्रों में चूंकि हमेशा आंधी तूफान आते रहते हैं इसलिए वहां के लोग कम ऊंचाई वाले समुद्र विमुख द्वार वाले घर बनाते थे उन्हें नारियल की टहनियों से इस तरह संगठित करके छा देते थे कि वे बड़े बड़े तूफान वारिश सह लेते थे।कभी इस तरह की बड़ी त्रासदियां देखने नहीं मिली ।

विकास की इस अंधी दौड़ ने प्रकृति के उपादानों की अवहेलना जिस तरह की है वह एक बड़ी वजह है इन दर्द नाक घटनाओं के लिए।होना यह चाहिए कोई बस्ती,गांव या नगर बसाने या कहीं बसने से पहले उस क्षेत्र की जलप्रवाह प्रणाली को भली-भांति समझ लिया जाए। उसका मार्ग ना बदला जाए, तथा प्रवाह क्षेत्र में घर वगैरह बनाकर अवरोध पैदा ना करें। प्रकृति अपना कार्य दीर्घ कालीन और अल्पकालीन दोनों तरह से करती है। अल्पकालीन घटनाएं भूकंप और ज्वालमुखी के रूप में सामने आती है जिसका समय आज तक कोई निर्धारित नहीं कर पाया है।जो प्रकृति के मूल ढांचे में यकायक परिवर्तन लाती है। दूसरी दीर्घ कालीन परिवर्तन हैं जो नदी, वर्षाजल, समुद्र,जीव-जंतु और हवाओं के द्वारा मंदगति से चलता रहता है मसलन द्वारिका का डूबना या गंगासागर का उभरना। इन मंद गति की परिवर्तन कारी शक्तियों ने विंध्याचल, सतपुड़ा और अरावली को आज पठार में परिवर्तित कर दिया है जबकि हिमालय मंदगति से अपनी ऊंचाई बढ़ा रहा है।

कहने का आशय यह है कि प्रकृति के साथ छेड़छाड़ मसलन,जंगल ख़त्म करना,जलबहाव को बांधों में रोकना, मनमाने क्षेत्र में बस्तियां बसाना, पर्वतों पर सड़कों का बनाना,भीड़ जुटाना सब विनाश के लिए जिम्मेदार हैं। हमें सुरक्षित रहना है तो प्रकृति के साथ अपने मधुर रिश्ते रखने होंगे। आदिवासियों से सीखिए वे प्रकृति के अनुरूप चलते हैं जो सहजता से मिलता है उसके लिए प्रकृति को धन्यवाद स्वरुप पूजा करते हैं।लालच और संग्रह वृत्ति से दूर हैं तभी इन आपदाओं से बचें हुए हैं।हमें आदिवासी नहीं बनना है किंतु उनकी जीवनशैली से सीखना होगा। इन घटनाओं से सबक लेकर सरकार को भी चाहिए कि वे जलप्रवाह क्षेत्र का निर्धारण करवाए। जहां इस तरह की आवासीय व्यवस्था है उसे हटवाए। बड़े बांधों की जगह छोटे-छोटे खेतों में मेंड़ बनाकर जल रोके।इससे मिट्टी संरक्षण भी होगा। पर्वतीय तीर्थ क्षेत्रों में हवाई सेवा शुरू करें। सड़कें ना बनाए तथा जनसंख्या नियंत्रण हेतु सक्रियता से काम करें। प्रकृति से सहयोग और तादात्म्य ही हमें इन आपदाओं से सुरक्षित रख सकता है।

पर्यावरण

यशवंत गोरे
लेखक व्यंग्यकार हैं।

उपयोगिता के अनुसार ही वृक्षारोपण किया जाना जरूरी

बारिश का मौसम शुरू होते ही अखबारों,सोशल मीडिया में वृक्षारोपण कार्यक्रमों के समाचारों की बाढ़ सी आ जाती है। अख़बारों के पन्नों पर वृक्षारोपण करते हुए नेताओं के फोटो से भरे दीखते है। यह सिलसिला हम हर साल और वर्षों से देखते आ रहे है। कॉलोनियों, हाउसिंग सोसायटियों , शिक्षा संस्थानों, सरकारी एवं निजी स्तर पर हर वर्ष वृक्षारोपण कर करोड़ों पौधों को लगाया जाता है। हर वर्ष एक जुलाई से सात जुलाई तक देश में वृक्षारोपण को बढ़ावा देने के लिए हरियाली महोत्सव भी मनाया जाता है। मध्यप्रदेश के इंदौर में प्रदेश सरकार की और से एक ही दिन में ग्यारह लाख पौधे लगाकर 'गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकार्ड' में अपना नाम दर्ज किया है। इस कार्यक्रम में देश के गृह मंत्री अमित शाह भी उपस्थित थे। मध्यप्रदेश सरकार ने इस वर्ष पांच करोड़ पौधे लगाने का लक्ष निर्धारित किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भी 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान चलाकर देश वासियों से अपील की है कि इस अभियान से जुड़ कर अपने माता जी के साथ या माताजी की स्मृति में एक पेड़ अवश्य लगाएं।

ऐसे अभियानों में देश वासी भावनाओं के साथ जुड़ तो जाते है परन्तु, एक बार पौधा रोपने के बाद लगाए गए पौधों में से कितनों का संरक्षण होता है और उसमें से कितने वृक्ष बनकर बड़े हो रहे है सुध लेने वाले लोग कम ही मिलेंगे। मध्य प्रदेश में इस प्रकार के अभियान पहले भी चलाये गए है। पेड़ लगाने का लक्ष्य तो निर्धारित किया जाता है, परन्तु सड़कों के निर्माण, मेट्रो की सुविधा और विकास के नाम पर कितने पेड़ों की बली दी जा रही है इसकी गिनती कोई नहीं करता।

हर वर्ष काटे गए वृक्षों एवं लगाए गए पौधों का क्या अनुपात होता है यह भी एक अध्ययन का विषय है। दिन प्रतिदिन होते जलवायु परिवर्तन और तापमान में अंतर, ऋतुओं के कालचक्र बदलने से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि नए वृक्ष तैयार होने की अपेक्षा पुराने वृक्षों की कटाई निश्चित ही अधिक हो रही है।

पौधारोपण करते समय यह ध्यान रखा जाय कि जहाँ पौधा रोपा जा रहा है वह स्थान उस पौधे के फलने -फूलने के लिए उपयुक्त वातावरण आदि की दृष्टि से अनुकूल है कि नहीं। कालोनियों, हाउसिंग सोसायटी में उत्साही पर्यावरण प्रेमी बढ़-चढ़ कर उत्साह में पौधरोपण कर तो देते है , परंतु उस समय यह ध्यान नहीं रखा जाता कि रोपा गया पौधा बड़ा होकर परिसर या आवासों को नुकसान तो नहीं पहुंचाएगा?

वृक्षारोपण करते समय स्थान का चयन हम ऐसा करें जहां उसकी उपयोगिता अधिक उपयुक्त हो। वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण को कम करने वाले वृक्षों को शहरी क्षेत्रों तथा राष्ट्रीय राजमार्गों के किनारे लगाए तो ज़्यादा उपयोगी होंगे। नीम, पीपल, बरगद, जामुन, कटहल अर्जुन, अशोक जैसे पेड़ जो प्रदूषण को काम करते है। कृषि भूमि पर अन्य फसलों के साथ फलदार एवं औषधीय वृक्षों जैसे आम, अमरूद, आंवला, इमली, कटहल, बाँस, सागवान को लगाएं तो इससे कृषक को दोहरा लाभ होगा। एक तो मिट्टी कटाव को रोक कर भूमि सुधार में उसे मदद मिलेगी क्योंकि उनकी जड़ें जमीन में गहरे में जाने से बारिश के पानी को गहराई तक पहुँचाने में मदद करती है तथा जलस्तर को बढ़ाने के साथ मिट्टी के कटाव को भी रोकती है। दूसरा लाभ फलों एवं लकड़ी से किसान को अतिरिक्त आर्थिक लाभ भी होगा। मंदिर परिसरों या उसके आसपास ऐसे पौधे लगाए जाए जो धार्मिक महत्व से पवित्र माने जाते है। ऐसी जगहों पर बेल,पीपल, बरगद, गूलर, पलाश, मंदार, कदंब जैसे वृक्षों को लगाया जाना ज़्यादा उपयोगी होगा। पहाड़ी इलाकों में बांज, अखरोट, नाशपाती, अंजीर, खुबानी जैसे पौधों का रोपण उनके अनुकूल होता है। प्रसिद्ध पर्यावरणविद एवं चिपको आंदोलन के प्रेरणा स्त्रोत पद्मभूषण श्री सुन्दरलाल बहुगुणा ने हमेशा इस बात पर बल दिया कि विदेशी प्रजाति के पौधे जैसे यूकेलिप्टस, ल्यूसिन, प्रसोपीप जैसे वृक्षों के बजाय देशी वृक्षों को लगाना चाहिए।

हमारे यहाँ कुछ फलदार वृक्ष दुर्लभ होते जा रहे है उन्हें बचाए रखना भी ज़रूरी है जामुन, खिरनी, करोंदे, विलायती इमली, इमली, शहतूत, खजूर जिनकी किसी समय बहुतायत थी तथा उनसे प्राप्त फलों को कभी ख़रीद कर नहीं खाया जाता था, परंतु अब ख़रीद कर भी खाने को नहीं मिलते। शहरी क्षेत्र की नई पीढ़ी तो इनमें से कई फलों से अनभिज्ञ सी है। कोरोना वायरस में इम्यूनिटी बढ़ाने के उपायों में भारतीय भोजन में उपयोग आने वाले मसालों की उपयोगिता साबित हुई है। देशी -विदेशी बाजारों में भारतीय मसालों की मांग अचानक बढ़ गई है ऐसे में काली मिर्च, इलायची, अदरक, हल्दी, जीरा, तेजपान दालचीनी आदि मसाले पैदा करने वाले को पौधों को बहुतायत से लगाए जाए तो आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा की दिशा को भी बल मिलेगा। इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च (आई. सी. ए. आर) के महानिदेशक डॉ. टी. महापात्रा का कहना है कि भारतीय मसालों की गुणवत्ता अच्छी है, जबकि हमारे यहाँ इनके उत्पादन में विशेष ध्यान नहीं दिया जाता जिनका उत्पादन खराब पड़ी भूमि और असिंचित भूमि पर भी किया जा सकता है। इन फसलों को अच्छे से और व्यापारिक दृष्टिकोण से उत्पादन करने की आवश्यकता है।

मृत्युंजय : स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ा एक अपरिहार्य उपन्यास

वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य की पुण्यतिथि पर विशेष

लीलू कुमारी रजक
लेखिका सेंट अलोशियस कॉलेज, कर्नाटक में अध्यापिका हैं।

1942 के स्वाधीनता आंदोलन में असम की पृष्ठभूमि पर लिखी गई एक महत्वपूर्ण साहित्यिक कृति है - 'मृत्युंजय' । जो असम के सुप्रसिद्ध रचनाकार 'वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य' द्वारा लिखित है । वीरेंद्र कुमार (मृत्युंजय के लिए) ज्ञानपीठ पाने वाले प्रथम असमिया साहित्यकार हैं । स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ा यह उपन्यास एक ऐसे सत्य घटना पर आधारित है जिसके वे प्रत्यक्ष गवाह रहें। आजादी की लड़ाई के उस दौर में जो जागृति लहर उमड़ी, वह पूर्वोत्तर में भी सुनामी की तरह ब्रिटिश सरकार को खुद में समेटने लगी थी । उस समय आजादी की परिकल्पना जन-जन को खुद में मथ रही थी, इसी परिकल्पना को साकार करने के लिए देशभर के कई युवा जूझ रहे थे । युवाओं के मन में यह सवाल उठ रहा था कि उनके संघर्ष का स्वरूप क्या होगा? हिंसा या अहिंसा? इसी विषय पर रचनाकार एक बड़ा सवाल खड़ा करते हैं कि इतनी-इतनी हिंसा और रक्तपात के बाद का मानव क्या यथार्थ मानव होगा? वह प्रश्न शायद आज भी ज्यों का त्यों, जहाँ का तहाँ खड़ा है, बना हुआ है । खासकर वर्तमान दौर में जब पूर्वोत्तर की राजनीति में हिंसा खुलकर तांडव मचा रही हो । चारो ओर रक्तपात हो रहा हो, अत्याचार हो रहा हो ।

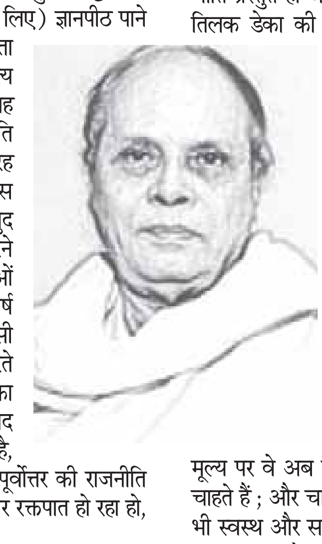

इस उपन्यास की तुलना कमोबेश 'बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय' के 'आनंद मठ' से होती है । 1942 'भारत छोड़ो आंदोलन' के समय युवा निर्णय नहीं ले पा रहे थे कि गांधीजी के अहिंसावादी सिद्धांत पर चले या गरम दल को अपनाकर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध मोर्चा खोल दें। कुछ युवा उस समय अपना धैर्य संभाल न पाए, उन्होंने ब्रिटिश सरकार के अत्याचार का बदला उनकी बोली में लेने का संकल्प ले लिया। असम में कुछ युवाओं ने कामरूप जिले में ब्रिटिश सेना की एक रेलगाड़ी को उड़ाने की योजना बनायी । इतना ही नहीं पुल को किस तरह योजनाबद्ध ढंग से ध्वस्त किया, उसका बेहद रोचक वर्णन उपन्यास में मिलता है । इन युवाओं के आक्रामक होने का कारण भी उपन्यास के इन पंक्तियों से स्पष्ट हो पाता है - समूचा देश उन दिनों मिलिटरी की एक विराट छावनी बना हुआ था। जापानी सेना चिन्दुइन नदी के उसपार पहुँच गयी थी । ब्रिटिश, अमेरिका, चीनी और ऑस्ट्रेलिया सेनाएं सारे देश में फैली थी । ऊपर से यमदूतों की तरह दया-मायाहिन पुलिस और सी.आई.डी. हाथ धोकर देश सेवकों के पीछे पड़ी हुई थी। कमी देशद्रोहियों की भी नहीं थी। शहर तो शहर, गाँवों तक में इन दुष्टों के दल खड़े हो गए थे। कम्युनिष्ट लोग अपनी ही करने पर उतारू थे। युद्ध का विरोध न करके, ये उसे फासिस्ट-विरोध संग्राम बताकर अपना सहयोग दे रहे थे। इतना ही नहीं, देश सेवकों के हर काम को ये गलत ठहरा रहे थे।

वीरेंद्र कुमार की लेखन शैली इतनी प्रभावी है कि इस उपन्यास को पढ़ते हुए पूरा का पूरा घटनाक्रम आँखों के समक्ष चलचित्र की भांति प्रस्तुत हो जाता है । यह उपन्यास शहीद भोगेवरी फकनानी, तिलक डेका की कुर्बानी, पहाड़ियों, नदियों व विभिन्न प्राकृतिक दृश्यों के साथ ही साथ युवा धनपुर लस्कर के प्रणय कथा को भी प्रस्तुत करता है । अन्य पात्रों में महंत गोस्वमी, रूपनारायण, डिमि, भिभि, लाई राम, राजकुमार, अहिना कुँवर आदि हैं। इन सभी पात्रों का एक ही उद्देश्य दिखता है, वो है - ब्रिटिश साम्राज्य का विध्वंस । स्वयं वीरेंद्र कुमार उपन्यास के पात्रों के विषय में लिखते हैं - इनके चरित्र पात्र समाज के उन स्तरों से लिये गये हैं जो सामाजिक वास्तविकता के बीभत्स रूप को देखते भोगते आये हैं और अपनी स्वाभाविक मानवीयता तक से वंचित हो बैठे हैं। वे अब उत्कण्ठित हैं कि संघर्ष करें और यथार्थ मानव बन उठने के लिए अपने को भी बदलें और समूचे समाज को भी। किसी भी मूल्य पर वे अब सामाजिक बीभत्सता का अस्तित्व लुप्त कर देना चाहते हैं ; और चाहते हैं कि समाज का बाहरी ही नहीं, भीतरी ढाँचा भी स्वस्थ और सहायक रूप ग्रहण करे।

उपन्यास के अंत में हम पाते हैं कि रचनाकार अहिंसा की बात करता है, उसके साथ खड़े रहने की ओर इशारा करता है। उसका झुकाव गांधी की तरफ होता है, वह इस देश को आहिंसा के रास्ते ले जाना चाहता है । तभी तो चारो ओर हिंसा का दृश्य देख गोसइन हिंसा के रास्तों से अपना मुँह मोड़ लेती है और अनुपमा क बातें सुन वह चिंता में खो जाती है और सोचती है कि स्वाधीनता पा जाने के बाद यह देश कैसा होगा? लोग अच्छे बनेंगे या बुरे? अब तक यह रक्तपात, तोड़-फोड़ आगजनी, हिंसा की यह प्रवृत्ति कहाँ छूट सकी है ? फिर गोसाइन, अनुपमा से कहती है - स्वाधीनता पा लेने के बाद लोग अच्छा बनेंगे या नहीं? और इसी संदेश के साथ उपन्यास का अंत हो जाता है। उपन्यास का यह अंत, हमे सोचने पर मजबूर करता है कि हम अहिंसा के रास्ते बढ़े और इसकी शुरुआत करे।

पेरिस ओलंपिक 2024

योगेश कुमार गोयल
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

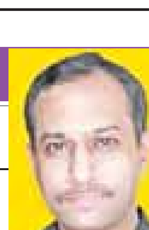

मनु भाकर ने लौटाया शूटिंग का स्वर्णिम दौर

पेरिस ओलंपिक के आठवें दिन भारत का प्रत्येक व्यक्ति ओलंपिक में पहला स्वर्ण पदक जीतने की पक्की उम्मीदें लगाए बैठा था और ये उम्मीदें टिकी थी भारत की 'मिरेकल गर्ल' मनु भाकर पर। पूरी उम्मीद थी कि 'मिरेकल गर्ल' मनु भाकर ओलंपिक में अपनी ऐतिहासिक हैट्रिक पूरी करते हुए इस स्पर्धा में भी भारत को स्वर्ण पदक दिलाने में कामयाब हो सकती हैं लेकिन इस बार वह पदक जीतने से थोड़ा सा चूक गई और महिलाओं की 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा के फाइनल में 40 में से 28 शॉट्स लगाने के साथ चौथे स्थान पर रही और इसी के साथ पेरिस ओलंपिक में मेडल की हैट्रिक लगाने का उनका सपना भी अधूरा रह गया। दरअसल तीसरे और चौथे स्थान के शूटर के बराबर प्वाइंट थे। इसके बाद मनु और हंगरी की मेजर वेरोनिका के बीच शूटऑफ हुआ, जिसमें मनु केवल तीन निशाने ही लगा पाई जबकि हंगरी की शूटर ने चार बार टारगेट को हिट किया और उसी के साथ मनु पदक की रेस से बाहर हो गई। पेरिस ओलंपिक के आठवें दिन मनु का लक्ष्य ओलंपिक में एक नया इतिहास रचना था लेकिन वह पदक हासिल करने से मामूली सी पीछे रह गई। वूमेन्स 25 मीटर पिस्टल के फाइनल में हार के बाद मनु का कहना था कि उनके ऊपर इस इवेंट को लेकर काफी दबाव था। हालांकि 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा में मिली इस हार के बावजूद भारत की इस इकलौती निशानेबाज ने वो खुशियां और गर्व के पल देश को दिए हैं, जिसकी ओलंपिक शुरू होने के समय तक शायद किसी ने कल्पना भी नहीं की थी।

मनु ने भारत के लिए पेरिस ओलंपिक में तीन अलग-अलग शूटिंग स्पर्धाओं में हिस्सा लिया और तीनों में ही उन्होंने अपने बेहतरीन प्रदर्शन से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत को गौरवान्वित किया। 3 अगस्त को जब मनु वूमेन्स 25 मीटर पिस्टल के फाइनल में खेलने उतरी तो हर नजर उन्हीं के प्रदर्शन पर केंद्रित थी। भले ही वह यह मुकाबला हार गई लेकिन कुल तीन शूटिंग स्पर्धाओं में से उन्होंने अपने जोश और जज्बे के साथ दो में कांस्य पदक जीतकर भारत में शूटिंग के सुनहरे दौर को वापस लाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। मनु की ही बदौलत भारत ने पहली बार शूटिंग में किसी एक ओलंपिक सीजन में तीन मेडल हासिल किए हैं। विभिन्न घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय शूटिंग स्पर्धाओं में अनेक पदक जीतने के बाद एक ही ओलंपिक में दो पदक जीतकर मनु ने ऐसा अविस्मरणीय इतिहास रचा, जो उनके अलावा ओलंपिक के 124 वर्षों के इतिहास में अब तक भारत का कोई भी अन्य दएथलीट नहीं कर पाया। पेरिस ओलंपिक में मनु ने जिस तरह का जबरदस्त प्रदर्शन किया और अपने मैचों के दौरान जिस प्रकार का 'धाकड़' खेल दिखाया, उसी के कारण उन्हें अब मनु भाकर के साथ-साथ 'मनु धाकड़' भी कहा जाने लगा है।

मनु से पहले कोई भी पुरुष या महिला एथलीट एक ही ओलंपिक में दो मेडल जीतने में सफल नहीं हुआ है। देश की आजादी से बहुत पहले ब्रिटिश मूल के भारतीय खिलाड़ी नॉर्मन प्रिचार्ड ने 1900 में आयोजित हुए ओलंपिक में 200 मीटर फर्राटा और 200 मीटर बाधा दौड़ में कुल दो रजत पदक जीतकर एक ही ओलंपिक में दो मेडल जीतने का रिकॉर्ड बनाया था और उम्मीद थी कि मनु 124 साल पुराने उस रिकॉर्ड को भी पीछे छोड़ सकती हैं लेकिन 'मिरेकल गर्ल' मनु भाकर की ओलंपिक में ऐतिहासिक हैट्रिक पूरी नहीं हो पाई। हालांकि पहला कांस्य पदक जीतने के साथ ही वह ओलंपिक के इतिहास में भारत के लिए निशानेबाजी में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला शूटर बन गई थी और उस पदक के साथ ही मनु ने शूटिंग में भारत के पदक के 12 वर्ष के सूखे को भी खत्म किया था।

मनु से पहले 2012 के लंदन ओलंपिक में गगन नारंग और विजय कुमार ने शूटिंग में एक-एक पदक जीते थे। ओलंपिक के 124 वर्ष के इतिहास में मनु से पहले भारत को शूटिंग में केवल 4 पदक ही नसीब हुए थे जबकि भारत केवल इसी ओलंपिक में मनु के दो पदकों सहित कुल 3 पदक जीत चुका है। शूटिंग में 2004 के एथेंस ओलंपिक में राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने रजत पदक जीता था, उसके बाद 2008 के बीजिंग ओलंपिक में अभिनव बिंद्रा ने स्वर्ण पदक भारत के नाम किया और 2012 के लंदन ओलंपिक में विजय कुमार ने रजत और गगन नारंग ने कांस्य पदक जीता था।

ओलंपिक में मनु ने अपना पहला पदक 28 जुलाई 2024 को 10 मीटर एयर पिस्टल शूटिंग के महिला वर्ग में जीता था। उस शूटिंग स्पर्धा में कांस्य पदक जीतकर पेरिस ओलंपिक में पदक हासिल करने वाली वह पहली भारतीय खिलाड़ी बनी थी। उसके बाद 30 जुलाई को मनु ने सरबजोत सिंह के साथ मिलकर 10 मीटर एयर पिस्टल के मिक्स्ड टीम इवेंट में कांस्य पदक जीता और उस जीत के साथ ही वह एक ही ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी बन गई थी। एक ही ओलंपिक में दो पदक जीतकर वह सुशील कुमार और पीवी सिंधु को भी पीछे छोड़ चुकी हैं। दरअसल ओलंपिक इतिहास में मनु से पहले यही दो ऐसे भारतीय खिलाड़ी थे, जिन्होंने एकल स्पर्धा में दो पदक जीते थे लेकिन उन्होंने अपने पदक एक ही ओलंपिक में नहीं बल्कि अलग-अलग ओलंपिक में जीते थे। सुशील कुमार ने 2008 और 2012 के ओलंपिक में कुश्ती में जबकि स्टार शटलर पीवी सिंधु ने 2016 और 2020 में एक-एक पदक जीते थे। बहरहाल, देश के लिए एक ही ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली मनु भाकर पर पूरे देश को गर्व है। ओलंपिक में अपने धाकड़ प्रदर्शन से मनु ने 140 करोड़ भारतवासियों का दिल जीत लिया।

पीपीपी मोड पर मेडिकल कॉलेज खोलने के शासन के निर्णय का विरोध हुआ मुखर

जी का जंजाल न बन जाए मेडिकल कॉलेज, एमपीएमओए ने बताए नुकसान

संजय द्विवेदी, बैतूल। मध्यप्रदेश शासन द्वारा हाल ही में दस जिलों में पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) मोड पर मेडिकल कॉलेज शुरू करने का निर्णय लिया है । इन 10 जिलों में हमारा बैतूल भी शामिल है और बैतूल में नया मेडिकल कॉलेज शुरू करने की तैयारी भी जोर-शोर से चालू हो गई है और इसके लिए बकायदा टेंडर भी हो चुके हैं लेकिन इसके पूर्व ही पीपीपी मोड पर मेडिकल कॉलेज शुरू करने को अनुचित करार देते हुए विरोध के स्वर भी बुलंद होने लगे हैं। इसी तारतम्य में सोमवार दोपहर को मध्यप्रदेश मेडिकल ऑफिसर्स एसोसिएशन (एमपीएमओए) की बैतूल इकाई के जिलाध्यक्ष डॉ. रूपेश पद्माकर, पीआरओ डॉ. रानू वर्मा, कोषाध्यक्ष डॉ. विनोद बरडे और सदस्य डॉ. जगदीश घोरे व डॉ. रंजीत राठौर सहित अन्य डॉक्टरों ने विधायक हेमंत खंडेलवाल और संभाग के कमिश्नर के नाम बैतूल कलेक्टर एवं सीएमएचओ, सिविल सर्जन को ज्ञापन सौंपकर इसका कड़ा विरोध किया है। ज्ञापन में जिला अस्पताल को ही पीपीपी मोड पर मेडिकल कॉलेज बनाए जाने से होने वाले नुकसानों की जानकारी भी दी गई है। एमपीएमओए की बैतूल इकाई ने मांग की है कि जिला अस्पताल को मूल स्वरूप में यथावत रखते हुए पीपीपी मोड के कॉलेज को इसके समानांतर बनाए जाने की मांग की है। यहां उल्लेखनीय है कि अभी कुछ दिन पूर्व ही मुलताई के पूर्व विधायक और किसान संघर्ष समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सुनील ने भी स्वास्थ्य सेवाएं जैसी मूलभूत आवश्यकताओं के निजीकरण करने को अनुचित निर्णय बताते हुए इसका सख्त विरोध प्रकट किया है।

एमपीएमओए के ज्ञापन में बताया गया है कि पीपीपी मोड पर जिला चिकित्सालय में मेडिकल कॉलेज दिया जाना तय हुआ है। इसके अनुसार 75 प्रतिशत बेड फ्री सेवा एवं 25 प्रतिशत बेड पेमेंट अथवा आयुष्मान से लिये जायेंगे। इसके साथ ही चिकित्सालय के नर्सिंग स्टाफ व डॉक्टरों की सेवाएँ प्राइवेट मैनेजमेंट के अधीन हो जाएगी या उन्हें निकालकर अन्यत्र शिफ्ट किया जाएगा। इस पूरी

व्यवस्था की कुछ तथ्यात्मक व व्यवहारिक खामियां हैं, जिन पर विचार करना अनिवार्य है। बिना इन पर विचार किये जल्दबाजी में इस व्यवस्था को अपनाया जाना हानिकारक हो सकता है। इसके कारण आगे जनता को परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

स्वास्थ्य श्रृंखला हो जाएगी भंग- भारत सरकार द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं के लिए एक बेहतर क्रम में गाँव में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों से सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, सिविल अस्पताल, जिला अस्पताल व मेडिकल कॉलेज की व्यवस्था की गई है। उपरोक्त मॉडल के चलते यह व्यवस्था भंग हो जाएगी, क्योंकि फिर जिला चिकित्सालय का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। जिले में केवल मेडिकल कॉलेज होगा जो कि प्राइवेट प्रबंधन (पीपीपी) के अधीन होगा। ऐसे में पूर्ण रूप से द्वितीय व तृतीय स्तर की स्वास्थ्य सेवाएं प्रदेश सरकार के हस्तक्षेप से बाहर होगी और प्राइवेट क्षेत्र की मनमानी होगी।

सरकारी कार्य भी प्राइवेट संस्था में- इन दस जिलों में पूर्व शासकीय स्वास्थ्य संस्था के अभाव में एमएलसी, पीएम व आयु निर्धारण इत्यादि जैसे महत्वपूर्ण कार्य भी प्राइवेट संस्था द्वारा किये जायेंगे, जो कि व्यवस्था के लिये उचित प्रतीत नहीं होता। इसके साथ ही इसके सही तरीकों से किए जाने पर भी संदेह होगा, क्योंकि अप्रत्यक्ष रूप से ये सभी कार्य शासकीय नियंत्रण से बाहर हो जायेंगे। यहां यह उल्लेख करना जरूरी है कि अन्य बड़े शहरों/जिलों जैसे भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर आदि में भी फोरेंसिक साइंस व पीएम जैसे ये कार्य, सरकारी मेडिकल कॉलेज या सरकारी अस्पतालों में ही संचालित हो रहे हैं।

बढ़ने की जगह कम हो जाएंगे बेड- वर्तमान में जिला चिकित्सालय में 500 बेड उपलब्ध हैं। पीपीपी मोड में भी इनकी संख्या उतनी ही रहेगी, लेकिन 25 प्रतिशत पेमेंट के अनुसार 500 में से 125 बेड पेमेंट कोटे के हो जायेंगे, जिस पर आयुष्मान वाले मरीजों का या पैसों से इलाज होगा। ये पेमेंट वाले 25 प्रतिशत बेड पर मरीज लेने का निर्धारण कौन करेगा, यह भी तय नहीं। ऐसे में जिले के आम और गरीब लोगों के लिए केवल 375 बेड ही फ्री बचेंगे। इसमें भी कौन से मरीज का इलाज फ्री होगा व कौन से मरीज पेमेंट देंगे, इसकी पारदर्शिता का नियंत्रण शासन के नियंत्रण से बाहर ही होगा। बहरहाल यह तय है कि इस व्यवस्था से बेड की संख्या तो कम हो ही जाएगी।

इस व्यवस्था को अमल में लाना जरूरी- एमपीएमओए ने इन हालातों को देखकर ज्ञापन में निवेदन किया है कि जिला चिकित्सालय में कार्यरत सभी डॉक्टर नर्सिंग ऑफिसर, सभी तृतीय व चतुर्थ कर्मचारी (फार्मास्टि एवं टेक्नीशियन) इत्यादि को यथावत शासन के अधीन रखकर ही कार्य संचालित किया जाए। साथ ही जिला चिकित्सालय के मूल स्वरूप को यथावत रखते हुए मेडिकल कॉलेज को समानांतर रूप से ही संचालित किये जाने की व्यवस्था पर विचार किया जाएं। ताकि उपरोक्त समस्याओं का भविष्य में सामना न करना पड़ें। ज्ञापन की प्रति मुख्यमंत्री मप्र. शासन, स्वास्थ्य मंत्री, स्वास्थ्य सचिव मप्र. शासन, संभागायुक्त नर्मदापुरम, कलेक्टर बैतूल और सीएमएचओ बैतूल तथा सिविल सर्जन बैतूल को प्रेषित की गई है।

सर्व मंगल कांवड़ यात्रा में केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके ने उठाई कांवड़

बैतूल/मुलताई। श्रावण मास के पावन महीने में धार्मिक संगठनों एवं भाजपा के पदाधिकारियों द्वारा सर्व मंगल कांवड़ यात्रा ताप्ती उद्गम स्थल मुलताई से निकाली गई इस यात्रा में केंद्रीय राज्य मंत्री भी शामिल हुए और कांवड़ उठाकर कांवड़ियों के साथ चले। मुलताई ताप्ती उद्गमस्थल से सर्वधर्म कांवड़ यात्रा का शुभारंभ दो अगस्त को हुआ सर्वमंगल कांवड़ यात्रा समिति के तत्वाधान में

कावड़ यात्रा भगवान भोलेनाथ के जयघोष के साथ ताप्ती जल लेकर चल रही है सालबर्डी शिवधाम में इसका समापन पांच अगस्त को होगा यंहा स्थित शिवलिंग पर ताप्ती जल से अभिषेक किया जाएगा। सर्व मंगल कांवड़ यात्रा रविवार को गेंहू बारसा से चारसी गांव पन्हूची यंहा केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उईके ने पहले तो कांवड़ियों का फूल माला पहनाकर स्वागत और कावड़ का पूजन अर्चन किया फिर उन्होंने ने भी कांवड़ उठाई और कांवड़ियों के साथ साथ चले साथ ही भाजपा जिलाध्यक्ष बबला शुक्ला और मोहन नागर भी मौजूद रहे। केंद्रीय राज्यमंत्री श्री उईके ने कहा की श्रावणमास में कावड़ यात्रा का बड़ा महत्व होता है क्षेत्र की खुशहाली और मंगकामना के साथ संगठनों ने यात्रा निकाली है इसी यात्रा में हम भी सहभागी बने है क्षेत्र में भोले नाथ खुशहाली बनाए रखे।

शिक्षक, छात्र ,पालकों ने पोषण के लिए लिया एक-एक पौधा गोद

एक पौधा मां के नाम अभियान

बैतूल/मुलताई। शासकीय एकीकृत माध्यमिक शाला लेंदागोंदी में एक पौधा मां के नाम अभियान के अंतर्गत 200 नीम के पौधे लगाए गए । इस अवसर पर जिला परियोजना समन्वयक जिला शिक्षा केंद्र बैतूल जितेंद्र भनोरिया, संकुल प्राचार्य बरखेड आई. के. मालवीय एवं जनशिक्षक सुनील कुमार कवडकर व बल्लू चिकाने

द्वारा एक-एक पौधारोपित कर एक पौधा मां के नाम अभियान में सहभागिता निभाई । प्रधान पाठक सुनिलदास वैष्णव सर ने बताया कि लगाए गए पौधे स्कूल शिक्षक व पालकों द्वारा क्रय कर शाला परिसर व गांव में लगाए जाना है। सभी पालकगण व छात्रों ने एक एक पेड़ गोद लिया जिसे वे अपनी मां का नाम देकर इसकी देखरेख करेंगे। हमारा लक्ष्य इस कार्यक्रम का विस्तार करके संपूर्ण गांव में पेड़ लगाकर गांव को हरित ग्राम की पहचान देना है। इस कार्यक्रम में सरपंच, ग्रामवासीगण व छात्रों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। शाला परिवार द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

नाबालिग बालिका का अपहरण कर दुराचार करने वाले आरोपी गिरफ्तार

बैतूल/मुलताई। थाना सांईखेड़ा पुलिस द्वारा नाबालिग का अपहरण कर दुराचार करने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष पेश किया के संबंध में पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार फरियादी द्वारा थाने पर अपनी पुत्री के किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा बहला फुसलाकर ले जाने के सबंधं मे रिपोर्ट किया जिसके आधार थाना सांईखेड़ा में अपराध कायम कर विवेचना में लिया गया। अपहर्ता की तलाश के दौरान मुखबिर द्वारा अपहरण करता के इंदौर में होने की सूचना मिलने पर थाना सांईखेड़ा पुलिस द्वारा

अपहर्ता की तलाश हेतू एक टीम गठित कर इंदौर रवाना किया गया अपहर्ता को इंदौर से दस्तयाब किया गया। अपहर्ता से पूछताछ के दौरान उसने अपने कथन पर बताया कि आरोपी यश साहू द्वारा शादी का लालच देकर उससे शारीरिक संबंध बनाए फिर उसे बहला फुसलाकर कर इंदौर ले गया जहां आरोपी यश साहू द्वारा अपहर्ता की मर्जी के बिना जबरदस्ती उसके साथ कई बार गलत काम किया पुलिस ने पीड़िता के कथनो के आधार पर प्रकरण में इजाफा 366ए, 450, 376(2)(एन) भादवि 5, 6 पॉक्सो एक्ट किया जाकर आरोपी यश पिता गुरु उर्फ गुरूप्रसाद साहू 21 साल निवासी रतनगंज तीसरा नागौबा मंदिर थाना नागपुरी गेट जिला अमरावती को गिरफ्तार कर न्यायालय मुलताई के समक्ष पेश किया गया है ।

पुलिस विभाग में फेरबदल, 25 दिन में ही आठनेर थाना प्रभारी लाइन अटैच

बैतूल। जिला पुलिस महकमे में तबादला का दौर शुरु हो गया है। करीब चार टीआई, दो दर्जन से अधिक उपनिरीक्षक सहित प्रधान आरक्षक और आरक्षकों की पदस्थापना में फेरबदल के आदेश एसपी निश्चल एन. झारिया ने जारी कर दिए हैं। 25 दिन पहले आठनेर के थाना प्रभारी बनाए गए विष्णु प्रसाद मौर्य को लाइन अटैच कर दिया है। सूत्रों के अनुसार उन्हें शिकायत मिलने पर लाइन भेज दिया गया है। उनके स्थान पर महिला थाना प्रभारी बबीता उइके को आठनेर टीआई बनाया गया है। इसी तरह पूर्व में स्थानांतरित हो चुके टीआई राजेश सातनकर को मुलताई से गंज और रविकांत डहेरिया को मुलताई के लिए रिलीव कर दिया है। एसपी झारिया ने सोमवार करीब तीन दर्जन टीआई, सबइंस्पेक्टर, प्रधान आरक्षक और आरक्षकों की तबादला सूची जारी की है। जिनमें लंबे समय से पदस्थ कई कर्मचारियों के थाने बदल दिए गए हैं।

जारी सूची में उपनिरीक्षक उत्तम नंदन मसतकार बैतूलबाजार से चौकी प्रभारी दुनावा, दिलीप यादव गंज से चौकी प्रभारी भीमपुर, संतोष सिंह नागवे कंट्रोल रूम से चौकी प्रभारी दामजीपुरा, नीरज खरे चौकी प्रभारी दुनावा से थाना मुलताई, बलराम यादव भीमपुर से आमला, नरेंद्र उइके कंट्रोल रूम से आमला, भानुप्रताप सिंह बुंदेला कोतवाली से मुलताई, पंचम सिंह उइके जिविशा से कोतवाली, दयाशंकर सिंह कोतवाली से शाहपुर, वाहिद खान आमला से कोतवाली, कन्हैयालाल गंजाम लाइन से सारणी, रणधीर सिंह राजपूत डीसीबी से गंज, रामस्वरूप रघुवंशी डीसीआरबी से बैतूलबाजार, विनोद मालवीय जिविशा से मुलताई, रमेश कुमार धुर्वे चोपना से रक्षित केंद्र, मुलायम सिंह मौर्य चिचोली से शाहपुर, मुज्जफर हुसैन मोहदा से चिचोली, रामदयाल बर्मन रक्षित केंद्र से आठनेर, निखलेश कुमार ठाकुर शाहपुर से चिचोली, राजकुमार पहाड़े आमला से मोहदा, कोमल प्रसाद रक्षित केंद्र से यातायात, रोहित टेकाम मोहदा से यातायात, सविता पवार अजाक से आठनेर, ललिता परते महिला थाना से चिचोली, शुभम चौबे रक्षित केंद्र से कोतवाली, बसंत उइके सारणी से आमला, गीता मरावी महिला थाना से गंज, शांता बर्डे अजाक से कोतवाली, नरेंद्र कुमार साहू कोतवाली से अजाक, दुर्गेश ठाकुर आमला से सारणी, अमित बुनकर चोपना से रक्षित केंद्र, हीरालाल रक्षित केंद्र से सारणी, दुर्गेश चौरे गंज से यातायात, रोहित मारन रक्षित केंद्र से शाहपुर, किशोर कुमार साहू आठनेर से रक्षित केंद्र शामिल हैं।

चोपना को विकासखण्ड का दर्जा देने की प्रक्रिया शुरू

विकासखंड का दर्जा होने से विकास को मिलेगी नई गति और स्थानीय प्रशासनिक सेवाओं में होगा सुधार

बैतूल/भौरा। पंचायत राज संचालनालय, मध्यप्रदेश ने चोपना ग्राम को विकासखण्ड का दर्जा देने की दिशा में कदम बढ़ा दिए हैं। यह निर्णय विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी, मुख्यमंत्री कार्यालय द्वारा भेजे गए पत्र के संदर्भ में लिया गया है। विकास आयुक्त कार्यालय, भोपाल को भेजे गए पत्र में पंचायत राज संचालक-सह-आयुक्त मनोज पुष्प ने उल्लेख किया है कि 132 घोड़ाडोंगरी विधानसभा क्षेत्र के विधायक गंगा सज्जन सिंह उइके ने चोपना ग्राम को विकासखण्ड का दर्जा प्रदान करने का अनुरोध किया है। विधायक के अनुसार, चोपना को विकासखंड का दर्जा देने से ग्राम के विकास को नई गति मिलेगी और स्थानीय प्रशासनिक सेवाओं में सुधार होगा। इससे न केवल प्रशासनिक सेवाओं का विकेंद्रीकरण होगा बल्कि ग्राम के निवासियों को भी कई सुविधाओं का लाभ मिल सकेगा।

अब आगे की प्रक्रिया

संदर्भित पत्र की प्रतिलिपि अपर मुख्य सचिव, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग मंत्रालय, भोपाल को सूचनार्थ और आवश्यक कार्यवाही के लिए भेजी गई है। विधायक को भी इस पत्र की प्रति भेजी गई है ताकि वे इस प्रक्रिया की प्रगति पर निगरानी रख सकें। पंचायत राज संचालक-सह-आयुक्त मनोज पुष्प ने सभी संबंधित विभागों से इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर त्वरित और प्रभावी कार्यवाही की अपील की है। चौपना ग्राम के निवासियों को इस निर्णय से अपने क्षेत्र के समृद्धि और विकास की नई उम्मीदें हैं। घोड़ाडोंगरी विधानसभा क्षेत्र के विधायक ने कहा, चौपना ग्राम का विकासखण्ड का दर्जा बढ़ाने से स्थानीय निवासियों को प्रशासनिक और विकासात्मक सेवाओं का बेहतर लाभ मिल सकेगा। यह कदम ग्रामीण क्षेत्र के समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण है और इससे क्षेत्र की समस्याओं का समाधान भी संभव होगा। हम इस प्रस्ताव के स्वीकृत होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

सावन मास में बड़ी संख्या में कांवड़िए पहुंचे ताप्ती तट

ब्रह्मकुमारीज साधकों ने निकाली द्वादश ज्योतिर्लिंग यात्रा

बैतूल/मुलताई। सावन माह में पवित्र नगरी मुलताई के ताप्ती तट पर भक्ति भाव का अनोखा नजारा दिखाई देता है। सोमवार के दिन ग्रामीण क्षेत्र से बड़ी संख्या में कांवड़िए ताप्ती तट पहुंचाते हैं और मां ताप्ती और शिव मंदिरों में पूजन पाठ कर मां ताप्ती का जल लेकर अपने ग्राम के शिवालयों की ओर प्रस्थान करते हैं। ग्रामीण क्षेत्र से आने वाले इन कावड़ियों का नगर वासी जगह-जगह स्वागत करते हैं। आज भी अनेक कावड़ियों की टोली ताप्ती तट पहुंची जिसमें से निकटतम ग्राम चौथिया से ग्रामीण बड़ी संख्या में कावड़ लेकर ताप्ती तट पहुंचे। जहां से पवित्र ताप्ती जल लेकर भगवान भोलेनाथ के अभिषेक के लिए रवाना हुए। कांवड़ियों के साथ ताप्ती तट पहुंचे चौथया ग्राम पंचायत के उपसरपंच सतीश डोंगरदिए ने बताया कि सावन के माह में भगवान

भोलेनाथ का अभिषेक करने से पुण्य लाभ अर्जित होता है और पापों से मुक्ति मिलती है। ग्रामीणों द्वारा आज पुण्य लाभ अर्जित करने के लिए कावड़ यात्रा का आयोजन किया गया था। जिसमें बड़ी संख्या में माताएं, बहने, बड़े, बुजुर्ग एवं बच्चे शामिल हुए। पैदल ही ग्राम चौथिया से मुलताई ताप्ती तट तक कावड़ लेकर पहुंचे। जहां से मां ताप्ती का पावन जल भरकर ग्राम चौथिया के लिए रवाना हुए। जहां भगवान भोलेनाथ का अभिषेक ताप्ती जल से किया जाएगा।

ब्रह्मकुमारीज साधकों ने निकाली द्वादश ज्योतिर्लिंग यात्रा

ब्रह्मकुमारीज मुलताई शाखा द्वारा श्रावण सोमवार के पावन अवसर पर द्वादश ज्योतिर्लिंग यात्रा का आयोजन किया गया। सोमवार दोपहर में द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन यात्रा का शुभारंभ स्थित ब्रह्माकुमारीज ज्ञान सूर्य भवन से हुआ। यात्रा में 12 चौपहिया वाहनों को रथ के रूप में सजाकर उनपर भगवान

शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों को विराजित किया गया था। वही संस्था की सदस्य महिलाएं सिर पर कलश धारण कर और पुरुष ध्वज लेकर यात्रा में शामिल थे। यात्रा के नगर भ्रमण के दौरान बैतूल रोड से ही जगह-जगह नागरिकों द्वारा यात्रा पर फूल बरसाकर स्वागत किया गया। ऐतिहासिक गुरुद्वारे के सामने गुरु की संगत ने यात्रा पर फूल बरसाकर स्वागत किया वही नगर भ्रमण के दौरान श्रद्धालुओं द्वारा जगह-जगह यात्रा का स्वागत कर द्वादश ज्योतिर्लिंग का पूजन किया गया। साथ ही यात्रा में शामिल श्रद्धालुओं को जगह-जगह पेयजल फल आदि भी वितरित किए गए। ब्रह्माकुमारीज सेवा केंद्र बैतूल रोड से प्रारंभ हुई यात्रा बस स्टैंड, जय स्तंभ चौक, फव्वारा चौक, स्टेशन चौक, नागपुर नाका, गांधी चौक, पुलिस थाना होते हुए ब्रह्माकुमारीज़ सेवा केंद्र पहुची।ब्रह्मकुमारीज मुलताई की संचालिका बीके मालती दीदी ने बताया की श्रावण मास के अवसर पर शिव भक्तों के दर्शन लाभ हेतु यह यात्रा का आयोजन किया गया।

संस्कृति ज्ञान परीक्षा में समस्त विद्यालय के छात्र-छात्राओं की होगी सहभागिता

सुबह सवेरे सोहागपुर।

विद्याभारती संस्कृति शिक्षा संस्थान के तत्वावधान में अखिल भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रतिवर्ष सरस्वती शिशु मंदिर द्वारा आयोजित कराई जाती है । इस परीक्षा में सरस्वती शिशु मंदिर विद्यालय के अलावा नगर के समविचारी विद्यालय के छात्र छात्राएं भी बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं । संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रभारी सुधीर

मीना ने बताया कि प्राचार्य अशोक कुमार दुबे के निर्देशन में आज सरस्वती शिशु मंदिर विद्यालय से गुरु नानक स्कूल प्रभारी श्रीमती कल्पना शर्मा, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय प्रभारी संतोष चौरसिया तथा संजय वानबंसी ने सम्पर्क करके प्रमाण पत्र वितरित करने में उनके संस्था प्रमुखों का सहयोग लिया है । इस वर्ष भी नगर की सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं की भी सहभागिता सेतु व्यापक स्तर पर प्रयास किए जा रहें हैं । गत वर्ष 1275 छात्र छात्राओं की सहभागिता की थी। इस वर्ष नगर के विभिन्न विद्यालयों से प्रभारी सम्पर्क करके छात्र छात्राओं के सहभागिता की बनाई जा रही है।सूची तैयार कर रहें हैं । उल्लेखनीय है कि गत वर्ष सेंट पैट्रिक इंग्लिश मीडियम स्कूल के 219 विद्यार्थियों ने सहभागिता की थी । जिसमें प्राचार्य दिलीप कुमार मुंझ को भी प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया है।

सांगाखेड़ा नर्मदा तट से सिद्ध महाराज तक कांवड़ यात्रा

सुबह सवेरे सोहागपुर।

अल्वी बाबा जन कल्याण समिति के तत्वाधान में ग्राम सांगाखेड़ा में मां नर्मदा घाट से कांवड़ यात्रा का आयोजन किया गया। कांवड़ यात्रा के पूर्व दीपक जी महाराज ने विधि विधान से मां नर्मदा की पूजन अर्चन करके के बाद कांवड़ यात्रा प्रारंभ हुई। इस कांवड़ यात्रा

में मातृशक्ति भी शामिल थीं। विशाल कावड़ यात्रा सिद्ध धाम पहुंचकर शिवजी का जलाभिषेक किया ।जिसमें प्रदेश कांग्रेस कमेटी सचिव ,यशवंत सिंह राजपूत , दीवान,नरेंद्र मालवीय,भैया जी पटेल, बबलू श्रोती,हाकम सिंह, भूरेलाल मसकोले, पवन नागवंशी, सुमित चौरे, एवं सैकड़ों की संख्या में मातृशक्ति कावड़ लेकर सम्मिलित हुई। जलाभिषेक के उपरांत भंडारे का भी आयोजन किया गया था। वहीं यशवंतसिंह राजपूत ने कन्या पूजन किया। कार्यक्रम के अंत में पौधरोपण किया गया।

आंगनबाड़ी एवं स्कूलों के निरीक्षण पर पहुँची कलेक्टर

नरसिंहपुर। कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले ने सोमवार को जनपद पंचायत गोटेगाँव के श्यामनगर एवं कुंडाछोटा का भ्रमण किया। उन्होंने प्रधानमंत्री आदि आदर्श ग्राम योजना अंतर्गत श्यामनगर (झोतेश्वर) में निर्माणाधीन किचिन शेड, शास.प्राथमिक शाला का निरीक्षण किया गया। शाला निरीक्षण के दौरान उन्होंने बच्चों से चर्चा की। बच्चों को मिलने वाले मध्याह्न भोजन एवं उसकी गुणवत्ता के बारे में जानकारी ली। इसके पश्चात उन्होंने ग्राम कुण्डा छोटा में बाउन्ड्रीवाल एवं आंगनबाडी के अतिरिक्त कक्ष का भी निरीक्षण किया।यहाँ आयोजित राजस्व महाअभियान 2.0 के अन्तर्गत राजस्व प्रकरणों के निराकरण की भी समीक्षा की। इस दौरान जनपद पंचायत सीईआई श्रीमती वर्षा झारिया सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी मौजूद थे।

वीरांगना क्लब में तीज क्वीन प्रतियोगिता आयोजित

नरसिंहपुर। वीरांगना क्लव सदस्य भी आपस मे पर्वो को मनाकर मन हर्षित कर सेवा भाव के कार्य करते हे वीरांगना क्लब ने भी हरियाली महोत्सव हरियाली तीज मे तीज क्वीन प्रतियोगिता कर मनाया सभी सदस्य हरे रंग का भारतीय परिधान पहनाकर एवं श्रंगार कर प्रतियोगिता मे शामिल हुए। तीज क्वीन के निर्णय हेतु।निर्णायक अतिथीयो को भी आमंत्रित किया आरती सिंह एवं मुक्ति राय आपका स्वागत साल श्रीफल एवं सुहाग सामग्री भेट कर पुष्प माला पहनाई सभी क्लब सदस्यो को भी सुहाग सामग्री भेट की। निर्णायक गण द्वारा तीज क्वीन का ताज प्रथम लीनेस सविता महोविया को पहनाया , द्वितीय स्थान पर लीनेस रजनी राजोरिया रही ।

माँ वाग्देवी मातृशक्ति समरसता कांवड़यात्रा में बना इतिहास

हजारों माता- बहनों ने भगवान धारनाथ का माँ नर्मदा व स्वयं भू सरस्वती कूप भोजशाला के पवित्र जल से किया जलाभिषेक

धार। भोजशाला और माँ वाग्देवी की मुक्ति तथा उनके गौरव की पुर्नस्थापना हेतु दृढ़ संकल्पित महाराजा भोज स्मृति वसन्तोत्सव समिति धार द्वारा प्रतिवर्ष माँ वाग्देवी मातृशक्ति समरसता कावड़यात्रा का आयोजन किया जाता है।

मातृशक्ति कावड़यात्रा का यह 22 वा वर्ष था।इस वर्ष भी पवित्र श्रावण मास के तृतीय सोमवार ,5अगस्त को माँ वाग्देवी मातृशक्ति कावड़यात्रा धार नगर के अति प्राचीन नागचंद्रेश्वर मंदिर से प्रारम्भ होकर ,धारानगरी के अधिष्ठाता भगवान धारनाथ का माँ नर्मदा एवं स्वंय प्रकट सरस्वती कूप भोजशाला के पवित्र जल से जलाभिषेक किया कावड़ यात्रा में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्र सेविका समिति से भारती दीदी कुशवाह , ज्योति सोनी उपस्थित रही ।

उक्त कावड़यात्रा हेतु समिति की मातृशक्ति द्वारा 1 माह से नगर की समस्त बस्तियों में व धार के समीप 10 किलोमीटर क्षेत्र में स्थित ग्रामीण मातृशक्ति से पवित्र श्रावण मास में कावड़यात्रा में सम्मिलित होने के लिए सतत सम्पर्क किया जा रहा था । कावड़यात्रा सशुल्क होकर ,सम्मिलित होने वाली मातृशक्ति अपनी कावड़ भी स्वयं सजा कर लाती हैं।

माँ वाग्देवी मातृशक्ति कावड़यात्रा नगर के प्रमुख मार्गो से होती हुई भोजशाला पहुँचेगी।भोजशाला में माँ वाग्देवी के दर्शन करने व अखण्ड संकल्प ज्योति मन्दिर पर जलपान-अल्पाहार पश्चात पुनः नगर में होती हुई धारेश्वर मन्दिर पहुँची ।

माँ वाग्देवी मातृशक्ति समरसता कावड़यात्रा हेतु कलावती रघुवंशी को यात्रा संरक्षक का दायित्व दिया गया है। कावड़यात्रा की संयोजिका का दायित्व चंदा बडू भाबर व सह संयोजिका का दायित्व सुमन जाट, सुनीता शर्मा तथा सरला पांडर को दिया गया है।कावड़यात्रा में हजारों की सँख्या में माता बहनें प्रतिवर्ष सम्मिलित होकर पुण्य लाभ प्राप्त करती है। इस वर्ष सनातन समाज के अभिन्न अंग किन्नर समाज के सदस्य भी कावड़ यात्रा में शामिल हुए ।

कावड़यात्रा की तैयारी हेतु समिति के अध्यक्ष सुरेश जलोदिया समिति के मंत्री बंटी राठौर, निखिल जोशी , सतीश सोनी,बडू भाबर,ओम प्रजापत, रवि सिकरवार,जगदीश राठौड़,संदीप चौधरी, शुभम पटेल , विक्रम लववंशी, श्याम मालवा,किशन द्विवेदी बलराम प्रजापत ,संजू शर्मा को प्रमुख रूप से उपस्थित रहे

समिति के अशोक जैन, गोपाल शर्मा, राजेश शुक्ला हेमंत दोराया, कृष्णा नागर , द्वारकाधीश राठौर, द्वारका अग्रवाल, सुधीर वाजपेई,श्याम मालवा, बडू भाभर, सतीश सोनी, पप्पू डामोर, अभिषेक मालवीय, रवि सिकरवार, श्रीश दुबे, निखिल जोशी, चुन्नू जायसवाल,सहित मातृशक्ति से कृपा चौहान, डोली जाधव, पायल जैन, सुमन जाट, कमला सोलंकी, नेहा चावला, माही सोलंकी , शिवानी , रमिला दीदी, ममता चौहान, आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रही । जानकारी भोज उत्सव समिति के महामंत्री सुमित चौधरी द्वारा दी गई।

श्रावण मास के तीसरे सोमवार को रुद्राभिषेक पर भक्तों की लगी भारी भीड़...

नर्मदापुरम। श्रावण मास के तीसरे सोमवार को आज विंध्याचल यात्री शेड में चल रहे रुद्राभिषेक कार्यक्रम में भक्तों का तांता लगा रहा। पूरे श्रावण मास आचार्य सोमेश परसाई जी के नेतृत्व में चलने वाले संगीतमय इस रुद्राभिषेक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए यहां हर सुबह भक्तों की आवा-जाही शुरू हो जाती, सुबह साढ़े पांच बजे आचार्य श्री के आगमन के साथ ही यहां रुद्राभिषेक कार्यक्रम प्रारंभ हो जाता, व्यास गादी पर विराजमान आचार्य श्री यहां बगैर भेद-भाव सभी को शिव अभिषेक का भरपूर मौका देते भक्त अपने हाथों से शिव लिंग को जल, दूध, दही, सुगंधित द्रव्य, धी, शक्कर, भांग, पुष्प, बेल पत्र अर्पित कर आचार्य श्री के साथ भगवान शिव की आराधना करते। मंत्रोच्चार के मध्य श्रृंगी से शिवलिंग पर गिरती दूध और जल धार इस दौरान पूरे वातावरण को भक्तिमय वातावरण में बदल देती, शेड के चारों ओर भक्तों के मुख से हर हर महादेव, ओम नमः शिवायः का स्वर सुनाई देता और दूध और नर्मदा जल शिवलिंग पर अर्पित होते दिखाई देता, आचार्य श्री के ठीक पीछे बैठ उनके शिष्य वाद्य यंत्रों पर आचार्य श्री के साथ-साथ इस दौरान मंत्रो को दोहराते पूरे क्षेत्र को शिवमय वातावरण में बदल देते।शतधार पूर्ण होते ही शिव लिंग पर अर्पित सभी वस्तुएं हटाकर होने वाले अभिषेक की छटा देखते ही बनती, इस बीच आचार्य श्री के मुखारविंद से शिवाष्टक का गायन उपस्थित जनसमूह को भाव-विभोर कर देता आचार्य श्री के मुखारविंद से उच्चारित होते शिवाष्टक का एक एक शब्द सुबह निःशब्द वातावरण को ओर अधिक गंभीरता बना देता, इस बीच भगवान का श्रृंगार देखने लायक सज जाता।

भगवान भोलेनाथ सुंदर सुंदर पुष्प मालाओं से सजाकर काफी आकर्षक बनाएं जा चुके भगवान के अंतिम पड़ाव का श्रंगार भस्म अर्पण का दृश्य भक्त सांस रोक टकटकी लगाए देख अलौकिक आनंद पाते। बड़े चांदी के छत्र के नीचे भगवान आशुतोष के विग्रह को एक कपड़े से ढक कर आचार्य श्री भस्मीभूत कर भक्तों को आश्चर्यचकित कर देते। अब भगवान की आरती और इसके बाद उपस्थित भक्तों को भक्ति संबंधित एक कथा का श्रवण आचार्य श्री का दैनिक नियम.. आज आचार्य श्री ने माता देवहूति के विवाह का दृष्टांत सुनाया जिनका विवाह कर्दम ऋषि के साथ हुआ और संतान के रूप में भगवान कपिल मुनि आए जो वे संसार के पहले मुनि थे जिन्होंने अपनी माता को ज्ञान दिया था। रुद्राभिषेक के पश्चात उपस्थित सभी भक्तों को प्रसाद वितरित हुआ।

कांवड़ यात्रा में शामिल हुए मंत्री श्री सिंह

मंत्री श्री सिंह ने उठाई कांवड़

नरसिंहपुर। प्रदेश के परिवहन एवं स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह श्रावण मास के तीसरे सोमवार पर भगवान शिव के भक्तों द्वारा निकाली जा रही कांवड़ यात्रा में शामिल हुए। यह कांवड़ यात्रा ग्राम सोकलपुर से निकाली गई। मंत्री श्री सिंह ने माँ नर्मदा जी की पूजन- अर्चन कर इस यात्रा में उन्होंने अपने कंधे पर कांवड़ उठाई और कांवड़ियों का उत्साह बढ़ाया। इस भक्तिमय माहौल में हर हर भोले के जयकारों के साथ यह यात्रा आगे बढ़ी। मंत्री श्री सिंह ने कावड़ उठाकर भगवान शिव एवं नर्मदा जी के भक्तों को सौंपी। यह भव्य कांवड़ यात्रा सोकलपुर नर्मदा नदी तट से गाडरवारा के डमरू घाटी धाम पर स्थित भगवान भोलेनाथ के मंदिर पहुंची। इस दौरान भक्तों में उत्साह देखा गया। कांवड़ियों ने कावड़ उठाकर भगवान भोलेनाथ पर मां नर्मदा का जल से अभिषेक किया। इस कांवड यात्रा में एक भक्त ने एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधरोपण भी किया।

जल स्तर को नियंत्रित करने के लिए बरगी बांध के चार गेट और खोले गए, तेरह गेट से छोड़ा जा रहा 1 लाख 12 हजार क्यूसेक पानी

नर्मदा तट से सुरक्षित दूरी बनाए रखने की कलेक्टर श्री सिंह ने की अपील

सीहोर (निप्र)। रानी अवंति बाई लोधी सागर परियोजना अंतर्गत बरगी बांध के जल स्तर को नियंत्रित करने के लिए आज दोपहर एक बजे बांध के चार और स्पिल-वे गेट खोले गए हैं। डैम के 9 गेट पूर्व में खोले जा चुके हैं तथा जल निकासी की मात्रा बढाकर 1 लाख 12 हजार 160 क्युसेक पानी की निकासी की जाएगी। बरगी बांध के कार्यपालन यंत्री श्री अजय सूरे ने जानकारी दी कि रविवार 4 अगस्त की सुबह बांध का जलस्तर 421.25 मीटर रिकार्ड किया गया था जो ऑपरेशनल मैन्युल के अनुसार 15 अगस्त तक निर्धारित 421 मीटर से अधिक है। उन्होंने बताया कि कैचमेंट एरिया में हो रही बारिश के कारण बांध 88 प्रतिशत भर चुका है । बांध के बैक वाटर से मंडला में नर्मदा नदी का जलस्तर खतरे के निशान से ऊपर हो गया है। उन्होंने जानकारी दी कि बांध में वर्तमान में 4 हजार 523 क्युमेक पानी की आवक हो रही है । परियोजना प्रशासन ने बांध के जलस्तर को नियन्त्रित आज रविवार 4 अगस्त की दोपहर 1 बजे जल निकासी की मात्रा बढाने का निर्णय लिया है । इसके लिये बांध के चार जलद्वार और खोले गए हैं तथा कुल 13 गेटों से 3 हजार 176 क्युमेक (1 लाख 12 हजार 160 क्युसेक) पानी की निकासी की जायेगी।

राज्यमंत्री श्री पटेल ने किया प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सिंहपुर बड़ा का निरीक्षण

परिसर में किया पौधारोपण

नरसिंहपुर। प्रदेश के लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री श्री नरेंद्र शिवाजी पटेल ने जिले के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सिंहपुरबड़ा का आकस्मिक निरीक्षण कर आवश्यक निर्देश दिये। उन्होंने यहां दवा वितरण केंद्र का जायजा लिया और उपलब्ध दवाईयों की जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान राज्यमंत्री श्री पटेल ने यहाँ भर्ती मरीजों एवं उनके परिजनों से बात की। उन्होंने यहाँ मिल रही चिकित्सा सेवाओं के संबंध में भी मरीजों से जानकारी ली। राज्यमंत्री ने निरीक्षण के दौरान स्वास्थ्य केन्द्र की व्यवस्थाओं और उपलब्ध सेवाओं के संबंध में समस्त स्टाफ एवं अधिकारियों से जानकारी ली। उन्होंने यहां की व्यवस्थाओं की प्रशंसा कर अधिकारियों एवं स्टाफ की तारीफ की। उन्होंने कहा कि जिले की समस्त स्वास्थ्य संस्थाएं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सिंहपुरबड़ा के जैसे व्यवस्थाओं के लिए प्रेरणा लें। राज्यमंत्री श्री पटेल ने यहां एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस अवसर पर तेंदूखेड़ा विधायक श्री विश्वनाथ सिंह, सीएमएचओ डॉ. एपी सिंह सहित स्वास्थ्य विभाग का अमला मौजदू था।

बुनियादी साक्षरता एवं सांख्यात्मक ज्ञान पर आधारित पांच दिवसीय विकासखण्ड स्तरीय रिफ्रेशर प्रशिक्षण प्रारंभ

नरसिंहपुर। राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल के निर्देशानुसार जिले के सभी जनपद शिक्षा केंद्र पर पांच दिवसीय विकासखंड स्तरीय रिफ्रेशर प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण में बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान के विषय में 5 अगस्त से शुरू किया गया है। यह प्रशिक्षण प्रथम चरण में विकासखंड स्तर पर कक्षा पहली व दूसरी पढ़ाने वाले विकासखंड चांवरपाठा के 120, सांईखेड़ा के 129, गोटेगांव के 120, नरसिंहपुर के 130, करेली के 90 एवं चीचली के 80 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। यह प्रशिक्षण जिले में कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले के निर्देशन व सीईओ जिला पंचायत श्री दलीप कुमार के मार्गदर्शन में आयोजित किया जा रहा है। प्रशिक्षण में निपुण फेलो पीयूष चोपावर ने प्रशिक्षण के मुख्य उद्देश्यों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि कक्षा पहली दूसरी के शिक्षकों के लिए बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान से संबंधित हिंदी, अंग्रेजी व गणित विषय के मुख्य बिंदुओं पर पुनः शिक्षकों को प्रशिक्षित करना है, जिससे विद्यालय स्तर पर छात्र

की बुनियादी शिक्षा में समझ विकसित हो सके। जिला परियोजना समन्वयक डॉ. आरपी चतुर्वेदी ने कहा कि प्रशिक्षण में मास्टर ट्रेनर द्वारा शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। छात्र की प्रगति को ट्रेकर एवं साप्ताहिक, मासिक आवधिक आंकलन कर बुनियादी शिक्षा में दक्ष किया जाएगा। रिफ्रेशर प्रशिक्षण में मास्टर ट्रेनर द्वारा शिक्षकों की सहभागिता एवं डेस्क बोर्ड के माध्यम से शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन प्री- टेस्ट भी दिया गया। विकासखण्ड नरसिंहपुर के अंतर्गत डाइट प्रभारी प्राचार्य आरके यादव, व्याख्याता संजय शर्मा, बीआरसी ओपी राय, बीएसी बृजेश नेमा द्वारा डाइट नरसिंहपुर एवं जनपद शिक्षा केन्द्र में आयोजित प्रशिक्षण का अवलोकन कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। विकासखण्ड करेली में जनपद शिक्षा केन्द्र स्तरीय प्रशिक्षण में सहायक संचालक विकासखण्ड अधिकारी सुश्री प्रतिक्षा बायकर, डाइट व्याख्याता डीके सेन, मुकेश नेमा, बीएसी प्रमेन्द्र सिंह जाट, अजीत सिंह जाट द्वारा अवलोकन किया गया।

प्रदेश में लागू हो सकता है बॉयोमीट्रिक अटेंडेंस सिस्टम, नोटिफिकेशन जारी

सरकारी दफ्तरों के साथ स्कूल-कॉलेजों में कर्मचारियों पर होगा लागू

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में सरकारी दफ्तरों और स्कूल व कॉलेजों में कर्मचारियों, अधिकारियों और टीचर्स के लिए आधार बेस्ड बायो मीट्रिक अटेंडेंस सिस्टम लागू किए जा सकते हैं। केंद्र सरकार के निर्देश के बाद प्रदेश के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग ने इसको लेकर नोटिफिकेशन भी जारी कर दिया है।

हालांकि यह व्यवस्था अभी अनिवार्य नहीं की गई है पर माना जा रहा है कि आधार के उपयोग की अनुमति अटेंडेंस सिस्टम के लिए दिए जान के बाद अब यह व्यवस्था जल्दी ही सभी विभागों में लागू हो सकती है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा जारी किए गए नोटिफिकेशन में कहा गया है कि केंद्र सरकार द्वारा राज्य सरकार के सभी कार्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों में आधार बेस्ड बायो मीट्रिक सिस्टम (एईबीएएस) शुरू करने का फैसला किया गया है। इसलिए अब एमपी के दफ्तरों में यह व्यवस्था लागू की जाएगी।

इसके माध्यम से कर्मचारियों और शिक्षकों की अटेंडेंस सिस्टम को प्रभावी करने के लिए मध्य प्रदेश राज्य इलेक्ट्रानिक्स विकास निगम राज्य सरकार को टेक्निकल एडवाइस देने का काम करेगा। बायो मीट्रिक सिस्टम अटेंडेंस दर्ज करने का माध्यम बनेगी। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग ने कहा है कि इस प्रणाली को लागू किए जाने के चलते आफिस और स्कूल, कालेज टाइम में कोई बदलाव नहीं होगा। साथ ही कर्मचारियों, टीचर्स की जल्दी और देर से उपस्थिति को लेकर भी पहले से प्रभावी नियमों में कोई बदलाव नहीं होगा।

स्वैच्छिक आधार पर लागू हो सकेगी व्यवस्था

विभाग ने कहा है कि केंद्र सरकार ने सुशासन के लिए आधार अभिप्रमाणित किए जाने की व्यवस्था तय की है जिसमें समाज कल्याण, नवाचार और ज्ञान नियमावली का पालन होता है। विभाग ने यह कहा है कि केंद्र सरकार ने इसे अनिवार्य नहीं किया है। इसलिए आधार बेस्ड बॉयोमीट्रिक अटेंडेंस सिस्टम का उपयोग स्वैच्छिक आधार पर किया जा सकेगा।

बारिश से छोटी-बड़ी नदियां उफान पर, बरगी डैम 94 प्रतिशत भरा

सेल्फी लेते समय डूबे दो युवक, मौत ; शिवपुरी में नदी में फंसे 18 लोगों का रेस्क्यू

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में बारिश से छोटी-बड़ी नदियां उफान पर हैं। बरगी, बाणसागर जैसे 10 बड़े बांधों के गेट खोलकर पानी छोड़ा जा रहा है। जबलपुर में बरगी बांध 94 प्रतिशत भर चुका है। ऐसे में सोमवार शाम को डैम के और तीन गेट खोले जा सकते हैं। अभी 17 गेटों से पानी छोड़ा जा रहा है। भोपाल में दिनभर रिमझिम बारिश के साथ शाम को तेज बारिश होने लगी थी।

इधर, शिवपुरी में सिंध नदी में उफान आने से टापू पर 18 लोग फंस गए थे। दो घंटे की मशक्कत के बाद पुलिस और एसडीईआरएफ की टीम ने उनका रेस्क्यू किया। उधर, उत्तराखंड में केदारनाथ यात्रा पर गए धार के 6 यात्रियों को सेना के हेलिकॉप्टर से रेस्क्यू किया गया। सागर के बीना में गौधाम जलाशय में सेल्फी लेने के दौरान दो लोगों की डूबने से मौत हो गई। सतना में मकान ढहने से दिव्यांग युवक की मौत हो गई। हरदा में भी जर्जर मकान की दीवार ढह गई। सागर के बीना और खुरई में मकानों में पानी भर गया।

इंदौर, उज्जैन, भोपाल-ग्वालियर संभाग में बारिश का अलर्ट- मौसम विभाग ने अगले कुछ घंटों में इंदौर, उज्जैन, भोपाल, ग्वालियर, चंबल संभाग में बारिश होने का अलर्ट जारी किया है। इसके अनुसार राजगढ़, बड़वानी, बुरहानपुर, खंडवा के ओंकारेश्वर, खरगोन के महेश्वर, अलीराजपुर, रतलाम, मंदसौर, नीमच, झाबुआ में मध्यम बारिश जबकि भोपाल, सीहोर, उज्जैन, आगर-मालवा, शाजापुर, देवास में हल्की बारिश होने की संभावना है।

इंदौर, धार के मांडू, बैतूल, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सीधी, सिंगरौली, रीवा, बालाघाट, सिवनी, मंडला, गुना, अशोकनगर, शिवपुरी, श्योपुर, हरदा, विदिशा, रायसेन के भीमबेटिका और सांची, नर्मदापुरम के पचमढ़ी, नरसिंहपुर, सागर जिलों में भी मौसम के बदलने का अनुमान है।

एमपी में अब तक 20 प्रतिशत बारिश ज्यादा हुई- प्रदेश में मानसून की एंट्री 21 जून को हुई थी। एक सप्ताह में ही पूरे प्रदेश में मानसून छा गया था, तभी से तेज बारिश का दौर चल रहा है। इस वजह से अब तक 20 प्रतिशत बारिश ज्यादा हो चुकी है।

अपर मुख्य सचिव ऊर्जा ने ग्वालियर में कराए मीटर सील

ग्वालियर सिटी में किया औचक निरीक्षण और विजिलेंस जांच

भोपाल (नप्र)। अपर मुख्य सचिव ऊर्जा श्री मनु श्रीवास्तव ने रविवार को ग्वालियर सिटी के सुरेश नगर एवं प्रमिला प्लाजा एरिया का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने पाया की उक्त क्षेत्र के अनेक उपभोक्ता अटल गृह ज्योति योजना का लाभ ले रहे हैं, जबकि उनके परिसर काफी बड़े हैं और उनके परिसर का विद्युत भार भी स्वीकृत भार से अधिक है। उन्होंने सुरेश नगर के उपभोक्ता अशोक कुमार शुक्ला के परिसर का मीटर सील कराकर मीटर टेस्टिंग लैब में भिजवाया। इसी प्रकार प्रमिला प्लाजा एरिया में 5-6 उपभोक्ताओं के मीटर में अनियमितता पाए जाने पर मीटर सील कराया गया तथा लैब में परीक्षण के लिये भेजा गया। निरीक्षण के दौरान मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रबंध संचालक श्री क्षितिज सिंघल एवं मुख्य महाप्रबंधक ग्वालियर क्षेत्र श्री राजीव गुप्ता उपस्थित थे।

गौरतलब है की इन उपभोक्ताओं द्वारा अटल गृह ज्योति योजना का लाभ लिया जा रहा था, जबकि इनके परिसर का लोड स्वीकृत भार से कहीं अधिक पाया गया है।

जनसंपर्क की असिस्टेंट डायरेक्टर का पति दिल्ली से गिरफ्तार

दोस्त के घर छिपा था निखिल, सास की तलाश; पूजा थापक ने किया था सुसाइड

भोपाल (नप्र)। जनसंपर्क विभाग में असिस्टेंट डायरेक्टर और पंचायत एवं ग्रामीण विकास की पीआरओ पूजा थापक ने 9 जुलाई को घर में फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली थी। गोविंदपुरा पुलिस ने इस मामले की जांच के बाद 16 जुलाई को दहेज मृत्यु, खुदकुशी के लिए मजबूर करने और प्रताड़ित करने की धाराओं में केस दर्ज किया था। तब से आरोपी निखिल दुबे और उसकी मां आशा दुबे फरार चल रहे थे।

पुलिस ने शनिवार को निखिल को दिल्ली से गिरफ्तार किया। वह अपने एक दोस्त के घर छिपा था। एसीपी दीपक नायक ने बताया कि तकनीकी जांच के आधार पर आरोपी की लोकेशन को ट्रेस किया। रविवार को टीम उसे भोपाल ले आई। रविवार की शाम को आरोपी को कोर्ट में पेश कर न्यायालय के आदेश पर उसे जेल भेज दिया है।

निखिल की मां की तलाश जारी- पुलिस की पूछताछ में निखिल ने बताया कि पत्नी की मौत की पुष्टि के बाद ही वह भोपाल छोड़ चुका था। उसे आभास हो चुका था कि पूजा के मायके वाले उसके

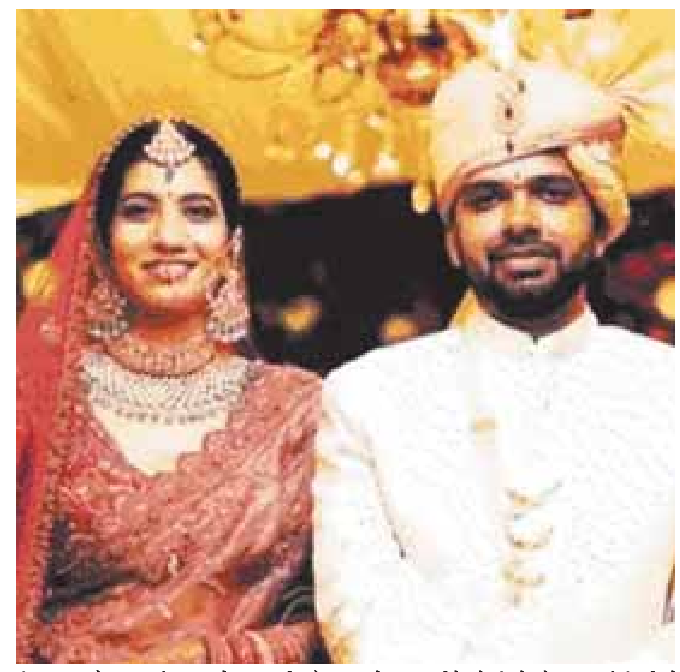

खिलाफ केस दर्ज कराएंगे। फरारी के दौरान वह दिल्ली की अलग-अलग होटलों में रहा। बीते दो दिनों से वह नई दिल्ली में रहने वाले अपने दोस्त के घर छिपा था। उसने दोस्त को केस के संबंध में कोई जानकारी नहीं दी। एसीपी का कहना है कि निखिल की मां आशा की तलाश की जा रही है। जहां निखिल मिला उस फ्लैट की तलाशी टीम ने ली थी। वहां आशा नहीं थीं, उनकी तलाश में दो टीमें जुटी हैं।

बेटे की गिरफ्तारी के बाद मां की संपत्ति का ब्योरा तैयार कर रही पुलिस- गोविंदपुरा पुलिस ने 28 जुलाई को कोर्ट में फरारी पंचनामा पेश किया था। आरोपी मां-बेटे की गिरफ्तारी के लिए कोर्ट की ओर से वारंट जारी कर 30 दिन का समय दिया गया था। इस तीस दिन में दोंनों की गिरफ्तारी नहीं होने पर संपत्ति कुर्की के आदेश कोर्ट की ओर से जारी किए जाते। उनके घर और करीबी रिश्तेदारों के घर के बाहर नोटिस चस्पा किए जाने के आदेश जारी होते। हालांकि निखिल की गिरफ्तारी के बाद अब पुलिस उसकी मां आशा के नाम की संपत्तियों का ब्योरा तैयार कर रही है। 28 अगस्त तक आशा की गिरफ्तारी नहीं होने की हालत में कोर्ट उनके नाम की संपत्तियों को कुर्क करने के आदेश दे सकती है।

दो साल पहले हुई थी निखिल-पूजा की शादी

ग्वालियर निवासी पूजा थापक की शादी साल 2022 में भोपाल के साकेत नगर में रहने वाले निखिल दुबे से हुई थी। निखिल अरेरा हिल्स स्थित सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग में सहायक संचालक है। दोनों का एक साल का बेटा है।

कॉल कर कहा था- बेटी को बचा लो

9 जुलाई को फांसी लगाने से पहले पूजा ने अपनी मां को कॉल कर कहा था, मां, फिर से लड़ाई-झगड़े होने लगे हैं। अब मुझसे बर्दाश्त नहीं होता। मैं मर रही हूं। फोन कट होते ही पूजा की मां घबरा गईं। उन्होंने दामाद निखिल दुबे को घटना की जानकारी दी। निखिल बेडरूम में पहुंचा तो दरवाजा अंदर से बंद था।

प्लाट की मांग करता था आरोपी पति

पूजा के मायके वालों ने पुलिस को दिए बयानों में बताया है कि शादी के समय 40-45 लाख रुपए खर्च किए थे। बेटी के पति और सास की मांग पर इंदौर में एक फ्लैट भी दिलाया था। उन्होंने नकद साढ़े सात लाख रुपए भी ले लिए थे। इसके बाद भी भोपाल में एक बड़ा और महंगा प्लाट दिलाने की मांग कर रहे थे। विवाद बढ़ने पर एक बार पति-पत्नी की काउंसिलिंग भी कराई जा चुकी थी।

भोपाल में महिला के साथ गैंग रेप

पानी के साथ पिलाया नशीला पदार्थ, 2 युवकों ने की ज्यादती

भोपाल (नप्र)। भोपाल में पति से अलग रहने वाली महिला के साथ गैंग रेप की वारदात सामने आई है। पीड़िता को परिचित युवक अपने घर ले गया था। यहां उसने पानी में नशीला पदार्थ देकर महिला के साथ ज्यादती की। इसके बाद आरोपी के अन्य दोस्त ने भी महिला से रेप किया।

बाद में किसी को भी घटना की जानकारी देने पर हत्या की धमकी देकर पीड़िता को जाने दिया। रविवार रात को बजरिया थाना पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। दोनों की गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैं।

थाना प्रभारी जितेंद्र सिंह गुर्जर ने बताया कि 27 वर्षीय महिला जहांगीराबाद थाना क्षेत्र में रहती है। वह अपने पति से अलग होकर रहने लगी है। महिला एक होटल में हाउस कीपिंग का काम करती है। पति से अलग होने के बाद महिला ऋषि कुशवाहा नाम के युवक के संपर्क में आई थी।

दोनों के बीच की दोस्ती हो गई। युवक ने महिला को शादी करने का झांसा दिया तथा उसके साथ नजदीकियां बढ़ा लीं। थोड़े दिन बाद ही महिला को पता चला युवक ने शादी का झूठा वादा किया है तथा वह पहले से ही शादीशुदा है।

बात करने के बहाने घर ले गया था

युवक के पहले से शादीशुदा होने की बात पता लगते ही महिला ने युवक से दूरी बनाते हुए उससे बात करना बंद कर दी। शनिवार देर रात महिला होटल से काम खत्म कर अपने घर लौट रही थी तभी रास्ते में ऋषि कुशवाहा मिल गया। उसने महिला से साथ में चलने को कहा, उसने कहा कि उसे कुछ बात करनी है।

महिला ने मना किया तो उसने पुराने प्रेम-प्रसंग की बात सबको बताकर बदनाम करने के की धमकी दी। महिला जब डर गई तो युवक उसे बजरिया इलाके में अपने घर पर ले गया। यहां पर उसने महिला को नशीला पदार्थ मिला हुआ पानी पीने के लिए दिया। पानी पीते ही महिला बेसुध होने लगी।

बेहोशी की हालत में की ज्यादती

महिला के नशे में आने के बाद युवक ने उसके साथ दुष्कर्म किया। थोड़ी देर ऋषि का एक दोस्त भी वहां पर पहुंचा तथा उसने भी महिला के साथ रेप किया। वारदात के बाद दोनों ने महिला को जान से मारने की धमकी दी थी। इसके कारण वह कुछ घंटों तक डरी रही लेकिन रविवार की रात वह थाने पहुंची तथा शिकायत करा दी।

पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता की धारा 64, 70 (1), 351 (3) तथा 3 (5) के तहत प्रकरण दर्ज करने के बाद आरोपी ऋषि व उसके दोस्त की तलाश शुरू कर दी है। टीआई का कहना है कि ऋषि की गिरफ्तारी के बाद ही उसके दोस्त की पहचान हो सकेगी।

5 महीने बाद भी नियुक्ति के इंतजार में चयनित शिक्षक

प्राइवेट नौकरी भी गई, बच्चों के एडमिशन के लिए असमंजस की स्थिति

भोपाल (नप्र)। एक वर्ष पहले मध्यप्रदेश में उच्च माध्यमिक शिक्षक चयन परीक्षा 2023 का आयोजन किया गया था। लेकिन, 20 फरवरी 2024 को आए रिजल्ट के बाद से 5 महीने बीतने पर भी चयनित शिक्षकों को नियुक्ति नहीं मिली है। हाल ही में इन शिक्षकों ने भोपाल में डीपीआई में अपनी नियुक्ति को लेकर भी ज्ञापन दिया है। नई नियुक्ति की आस में ये चयनित शिक्षक अपनी पुरानी नौकरियां भी छोड़ चुके हैं।

दस्तावेज सत्यापन कराया, नियुक्ति नहीं दी- चयनित शिक्षक रोबिन अग्रवाल ने बताया- शिक्षा विभाग द्वारा उच्च माध्यमिक शिक्षक चयन परीक्षा 2023 के 15 विषय के चयनित अभ्यर्थियों के दस्तावेज सत्यापन और शाला विकल्प चयन का कार्य एक माह पूर्व किया जा चुका है।

जिसके बाद से चयनित 3,400 अभ्यर्थी दिन-रात नियुक्ति की आस लगाए बैठे हैं। लोक शिक्षण संचलनालय द्वारा इन अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र जारी न करने से वह आए दिन भोपाल कार्यालय के चक्कर काटते और ज्ञापन देते नजर आते हैं।

तुरंत नियुक्ति देने का वादा किया था- रोबिन अग्रवाल ने कहा कि एमपी के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने सत्ता संभालते ही जिस नवाचार का जिक्र कर परीक्षाओं के बाद चयनितों को तुरंत नियुक्ति देने का वादा किया था और उनकी मंशानुसार पीएससी समेत अन्य विभागों ने चयन होने के बाद युवाओं को 15 दिन में नियुक्ति पत्र वितरित किए गए। मगर स्कूल शिक्षा विभाग और लोक शिक्षण संचालनालय ने 5 माह पूर्व चयनितों को अब तक नियुक्ति पत्र प्रदान नहीं किया है।

पुरानी नौकरी से किया रिजाइन- चयनित शिक्षक मुकेश कुमार ने कहा कि हमारा चयन तो हो गया है मगर अभी तक नियुक्ति पत्र नहीं दिए हैं। वर्ग 1 की नियुक्ति प्रक्रिया पूरी होने के बाद भी हम नियुक्ति पत्र का इंतजार कर रहे हैं। इसके चलते हमने पुरानी नौकरी से रिजाइन भी कर दिया।

उस समय हमें नहीं पता था कि हमारे साथ ऐसा होने वाला है। दूसरी तरफ यह भी तय नहीं है कि हमें नियुक्ति पत्र मिलेगा भी या नहीं। ऐसे में बच्चों के एडमिशन को लेकर भी स्थिति असमंजस की बनी हुई है।

सरकार बहनों को दें रक्षाबंधन का गिफ्ट- भोपाल से चयनित शिक्षक हेमलता वर्मा ने बताया- मैं ग्रेड वन की मेरिट होल्डर हूं। मैंने पात्रता परीक्षा दी थी मगर मुझे अभी तक ज्वाइनिंग नहीं दी गई है। मैं मुख्यमंत्री से कहना चाहती हूं हमारी इस समस्या का जल्द से जल्द समाधान करवाकर हम बहनों को रक्षाबंधन का उपहार दें, ताकि हम अपने भविष्य को लेकर आगे बढ़ पाएं।

मानसिक रूप से हूं परेशान- चयनित शिक्षक सीमा पाठक कहती हैं कि मैं ग्रेड वन की मेरिट होल्डर हूं। हमें अभी तक ज्वाइनिंग नहीं दी गई है। मैं मानसिक रूप से बहुत परेशान हूं, मुझे अभी तक ज्वाइनिंग नहीं दी गई है। हम ना तो बच्चों का एडमिशन करवा पा रहे हैं और ना ही हम आगे के लिए डिसीजन ले पा रहे हैं। मैं मुख्यमंत्री जी से आशा करती हूं कि वह जल्द से जल्द हमारी इस समस्या का समाधान करेंगे।

सागर हादसे में जिस एसपी को हटाया, वह विदेश में

5 महीने से तबादला चाहते थे, सरकार डेपुटेशन के लिए नहीं कर रही थी रिलीव

भोपाल (नप्र)। सागर के शाहपुर में मकान की दीवार गिरने से 9 बच्चों की मौत के बाद सरकार ने एसपी अभिषेक तिवारी, कलेक्टर दीपक आर्य और एसडीएम संदीप सिंह को हटा दिया। खास बात यह है कि एसपी अभिषेक तिवारी पिछले 15 दिन से विदेश में छुट्टी मना रहे हैं। वे पिछले 5 महीने से तबादला चाह रहे थे। केंद्र में प्रतिनियुक्ति का आदेश जारी होने के बावजूद डॉ. मोहन यादव सरकार उन्हें रिलीव नहीं कर रही थी।

साल 2013 बैच के आईपीएस अभिषेक तिवारी को मार्च 2024 में नेशनल टेक्निकल रिसर्च ऑर्गनाइजेशन (एनटीआरओ) में प्रतिनियुक्ति मिल गई थी, लेकिन लोकसभा चुनाव के मद्देनजर उन्हें गृह विभाग ने रिलीव नहीं किया। चुनाव के बाद उन्होंने फिर प्रयास किए,

लेकिन ऐसा नहीं हो पाया।

अब सागर में हुए हादसे के बाद उन्हें रविवार देर रात पद से हटाकर पुलिस मुख्यालय भेजा गया है, जबकि सरकार ने 27 जुलाई से 8 अगस्त तक उनकी छुट्टी अप्रूव कर दी थी। वे सरकार से अनुमति लेकर परिवार के साथ निजी यात्रा पर अमेरिका में हैं। सागर एसपी का प्रभार एडिशनल एसपी डॉ. संजीव उइके के पास है। सख्ती के नाम पर लिए गए निर्णय के बाद तिवारी के प्रतिनियुक्ति पर जाने का रास्ता लगभग साफ हो गया है।

तिवारी को मिल चुका है राष्ट्रपति वीरता पदक- एसपी अभिषेक तिवारी प्रदेश के उन चुनिंदा अफसरों में शामिल हैं, जिन्हें राष्ट्रपति वीरता पदक मिल चुका है। वे जब बालाघाट जिले के एसपी थे, तब 2019 और 2020 में नक्सलियों को मार गिराया था। इस पर उन्हें यह पदक दिया गया था।

बालाघाट के बाद तिवारी रतलाम जिले के एसपी बने थे। रतलाम में कुछ समय रहने के बाद उनका तबादला सागर कर दिया गया। वे पिछले साल मार्च से यहां पदस्थ थे।

देलावाड़ी घाट पर रेलिंग तोड़कर खाई में गिरी बस, 35 घायल

भोपाल से भैरूंदा जाते समय दुर्घटना ; ढलान पर गाड़ी न्यूट्रल करने से ड्राइवर ने खोया नियंत्रण

सीहोर (नप्र)। सीहोर जिले के बुदनी के देलावाड़ी घाट पर सोमवार को ओवरलोड बस पलट गई। तेज रफ्तार बस रेलिंग तोड़कर खाई में पलट गई। 40 सीटर बस में करीब 50 यात्री सवार थे। लगभग सभी यात्री घायल हुए हैं। हादसे के बाद ड्राइवर और कंडक्टर भाग गए।

घायलों को इलाज के लिए रेहटी और औबेदुल्लागंज के अस्पताल ले जाया गया है। दुर्घटना सुबह करीब साढ़े ग्यारह बजे की है। बताया जा रहा है कि गुप्ता कंपनी की बस भोपाल से भैरूंदा जा रही थी। ड्राइवर ने ढलान पर बस को न्यूट्रल कर लिया था। इस वजह से बस की रफ्तार तेज हो गई। वह अनियंत्रित होकर खाई में पलट गई। चार बार पलटने के बाद बस के सभी पहिए ऊपर हो गए।

हादसे की सूचना के बाद 108 एंबुलेंस मौके पर पहुंच गई। घायल यात्रियों को रेहटी, औबेदुल्लागंज अस्पताल ले जा गया है। रेहटी अस्पताल में 28 और 6 घायलों को औबेदुल्लागंज और बाकी को परिजन अन्य

अस्पताल में ले गए। घायलों की संख्या ज्यादा होने के कारण लोग उन्हें ट्रैक्टर-ट्राली से भी अस्पताल लेकर पहुंचें। रेहटी में भर्ती गंभीर घायलों को भोपाल रेफर किया गया है।

हादसे में ये हुए घायल

देवी सिंह कुर्मी पिता बाबूलाल कुर्मी (48) निवासी बिशनपुर थाना त्योंदा, जिला विदिशा।, महेंद्र पिता मुनाथ (35) निवासी मटठागांव थाना रेहटी,रमाबाई पति राम चरण (70) निवासी उमरिया,सौरभ सैनी पिता सुरेश सैनी, निवासी ग्राम सोयत थाना रेहटी,दुर्गा पिता माखन सिंह, निवासी नसरुल्लागंज,जितेंद्र चौहान पिता गुलाब सिंह, निवासी भोपाल,वासु पिता राजेश (8) निवासी औबेदुल्लागंज,राधिका पति अशोक (25) निवासी औबेदुल्लागंज,कृष्णा बाई पति नर्मदा प्रसाद (65) निवासी रतनपुर सेमरी,राजेश कुमार पिता रामलक्षण (36) निवासी लखीरपुर खीरी, उप्र,अर्जुन सिंह पिता मांगीलाल (48) निवासी रेहटी,बसंती पति रामस्वरूप (55) निवासी रमपुरा गडरिया, बनापुरा,रामस्वरूप पिता लोटन सिंह (65) निवासी रामपुरा गडरिया बानापुरा,श्वेता पिता बृजमोहन प्रजापति, निवासी भोपाल,अभयओझा पिता स्वर्गीय जानकी नंदन, निवासी भोपाल,चंद पिता फूलचंद, निवासी बलिया, उप्र,सुभाष,सुमित पिता दुर्गा प्रसाद, निवासी भोपाल, रामदुलारे पिता सुभाष ,फूल सिंह पिता गुलाब सिंह (28) निवासी बहराइच, उप्र,भीम पिता लक्ष्मी (20) निवासी गिरगिटी तहसील मेंहन पुरवा, जिला बहराइच उप्र,गणेश प्रसाद पिता गुनेश्वर प्रसाद (60) निवासी मंडीदीप,आरती पिता राम सिंह (20) निवासी छिदगांव मौजी, भैरुंदा,आरती निवासी औबेदुल्लागंज,मुकुरलाल पिता राम लखन निवासी बहराइच, उप्र,पुरुषोत्तम पिता गुरमुख दास, निवासी भोपाल,उधम सिंह, निवासी ग्राम बासनिया, थाना रेहटी, अकल सिंह, निवासी रेहटी।